मूल्य रु. ५-००

श्री स्वामिनारायण

मासिक

प्रकाशन दिनांक प्रत्येक महीने की ११ तारीख • सलंग अंक १२२ जून-२०१७

श्री घनश्याम महोत्सव

प्रकाशक : श्री स्वामिनारायण मंदिर अहमदाबाद-३८०००१.

(१) एस.एस.ओ. अन्तर्गत राले (नोर्थ केरोलीन) अमेरिका मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा दर्शन का लाभ लेते हुए स्थानिक हरिभक्त (२) नेसविले टेनीसी (अमेरिका) मंदिरका भूमिपूजन करते हुए तथा सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(३) कलीवलेन्ड (अमेरिका) मंदिर का नववें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अभिषेक करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री तथा श्री नरनारायणदेव युवक मंडल के युवको के साथ विविध विषय पर चर्चा करते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।

श्री स्वामिनारायण

श्री नरनारायणदेव पीठस्थान मुखपत्र

वर्ष - ११ ● अंक : १२

जून-२०१७

संस्थापक

श्री नरनारायणदेव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री १००८
श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री
श्री स्वामिनारायण म्युजियम
नारायणपुरा, अहमदाबाद.
फोन : २७४९९५९७ ● फोक्स :
२७४१९५९७
प.पू. मोटा महाराजश्री के संपर्क के लीए
फोन : २७४९९५९७
www.swaminarayanmuseum.com
दूर ध्वनि
२२१३३८३५ (मंदिर)
२७४७८०७० (स्वा. बाग)
फेक्स : ०७९-२७४५२१४५
श्री नरनारायणेदव पीठाधिपति
प.पू.ध.धु. आचार्य १००८
श्री कोशलेन्द्रप्रसादजी महाराजश्रीकी
आज्ञा से
तंत्रीश्री
स.गु. शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी (महंत
स्वामी)

पत्र व्यवहार

श्री स्वामिनारायण मासिक कार्यालय
श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर,
अहमदाबाद-३८० ००१.
दूर ध्वनि २२१३२१७०, २२१३६८१८.
फोक्स : २२१७६९९२
www.swaminarayan.info

पतेमें परिवर्तन के लिये
E-mail : manishnvora@yahoo.co.in

मूल्य - प्रति वर्ष ५०-०० ● प्रति कोपी ५-००

अ नु क्र म णि का

०१.	अस्मदीयम्	०४
०२.	प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा	०५
०३.	निंबतरु	०६
०४.	मुक्तोनी सभामें सदा बिराजते सर्वोपरि श्रीहरि	०८
०५.	इष्टदेव का सावधानीपूर्वक महिमा के साथ जिसे निश्चय रहेगा वही परमपद को प्राप्त करेगा	१०
०६.	श्री घनश्याम महोत्सव	१२
०७.	श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से	१४
०८.	सत्संग बालवाटिका	२०
०९.	भक्ति सुधा	२२
१०.	सत्संग समाचार	२६

अस्मदीयम्

चैत्र-वैशाख खूब तपा है। अब तो सामान्य मनुष्य भी ए.सी. का उपयोग करने लगा है। जिससे गर्मी का सहन नहीं हो पाता। पचीस-तीस वर्ष पूर्व गाँवो में मधुर नींद आती थी। आज उन्हीं गाँवो में ए.सी. या पंखे में भी नींद नही आती। अपने प.पू. बड़े महाराजश्री तथा वर्तमान प.पू. आचार्य महाराजश्री ऐसी टेव रखते थे कि विना पंखा के गाँवो में बड़े आनंद की नींद लेतें। इस वात को बहुत सारे संत-हरिभक्त जातने हैं। मनुष्य पूरे दिन टेन्शन में रहता है। उस समय इतना टेन्शन नहीं था। डायाबीटीज राज रोग माना जाता था। आज हर घर घर में है। प्रत्येक का जीवन टेन्शन मय हो गया है। शरीर में पसीना होना चाहिए। लेकिन पसीनानिकलने लायक परिश्रम नहीं करना है। जिससे ऐसे जटिल रोग शरीर में घर कर गये हैं। यद्यपि योगाभ्यास से बड़े जटिल से जटिल रोग मूल से खत्म होने के उदाहरण है। योग के विषय में खूब जन जागृति हुई है। अपने संप्रदाय में २०० वर्ष पहले स.गु. गोपालानंद स्वामी अष्टांग योग करते थे इससे सात अन्य बहुत सारे संत वैद्य भी थे। वे संतनि:स्वार्थ नि:शुक्ल आयुर्वेदिक दवा तैयार करके समाज में जो विमार लोग होते उन्हें देते और वे स्वस्थ हो जाते थे। इस तरह अनेक संत थे। इसका हम सभीको गौरव लेना चाहिए।

चातुर्मास का प्रारंभ होगा। जगत के लोगो को अपने जैसा आध्यात्मिक सुख नहीं मिलता। इस चार महीने में सत्संगी विशेष नियम करेंगे। शिक्षापत्री में आठ नियम में से कोई भी एक नियम पालन करने का संकल्प कीजियेगा। शास्त्र पठन, प्रदक्षिणा, दंडवत, संनिकट के मंदिर में झाडू-पोता करना, इन किसी नियम में से एक नियम निश्चित रुप से लीजिएगा। सर्वोपरि भगवान श्रीहरि आप सभी के ऊपर खूब प्रसन्न होंगे। छोटे बालक तो विशेष रुप से कोई एक अच्छाटेव रखेंगे।

तंत्रीश्री (महंत स्वामी)
शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी का
जयश्री स्वामिनारायण

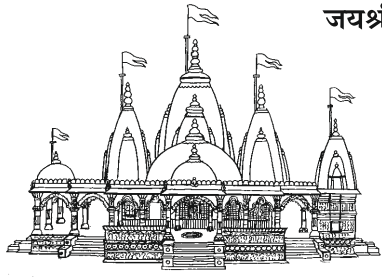

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१७)

१ श्री स्वामिनारायण मंदिर माणसा तथा उनावा पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२ श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकोलोनी तथा बोपल पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

३-४ श्री स्वामिनारायण मंदिर भक्तिनगर (मानकुवा) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

५ से १२ अमेरिका के धर्म प्रवास पर पदार्पण।

१४ प.भ. प्रतीकभाई ठक्कर के यहाँ पदार्पण, वस्त्रापुर।

१५-१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर भुज (कच्छ) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१७ श्री स्वामिनारायण मंदिर ईश्वरपुरा (बहनों के) माणसा पुनः मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर तथा भाइयों के मंदिर में पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१८ श्री स्वामिनारायण मंदिर वेगडवाव (ता. हलवद-मूलीदेश) पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१८ से ३० अमेरिका में राले श्री स्वामिनारायण मंदिर मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर तथा नेशविले टेनीसी मंदिर के खात पूजन प्रसंग पर पदार्पण।

३१ श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया (आर.सी. टेकनिकल रोड) मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर पदार्पण।

प.पू. लालजी महाराजश्री के कार्यक्रम की रुपरेखा

(मई-२०१७)

७ श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१४ श्री स्वामिनारायण मंदिर आदरज गाँव में कथा पारायण पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

१६ श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

२१ से ३० अमेरिका रालेनोर्थ केरोलीन श्री स्वामिनारायण मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर तथा श्री स्वामिनारायण मंदिर कलिवलेन्ड के पाटोत्सव प्रसंग पर पदार्पण।

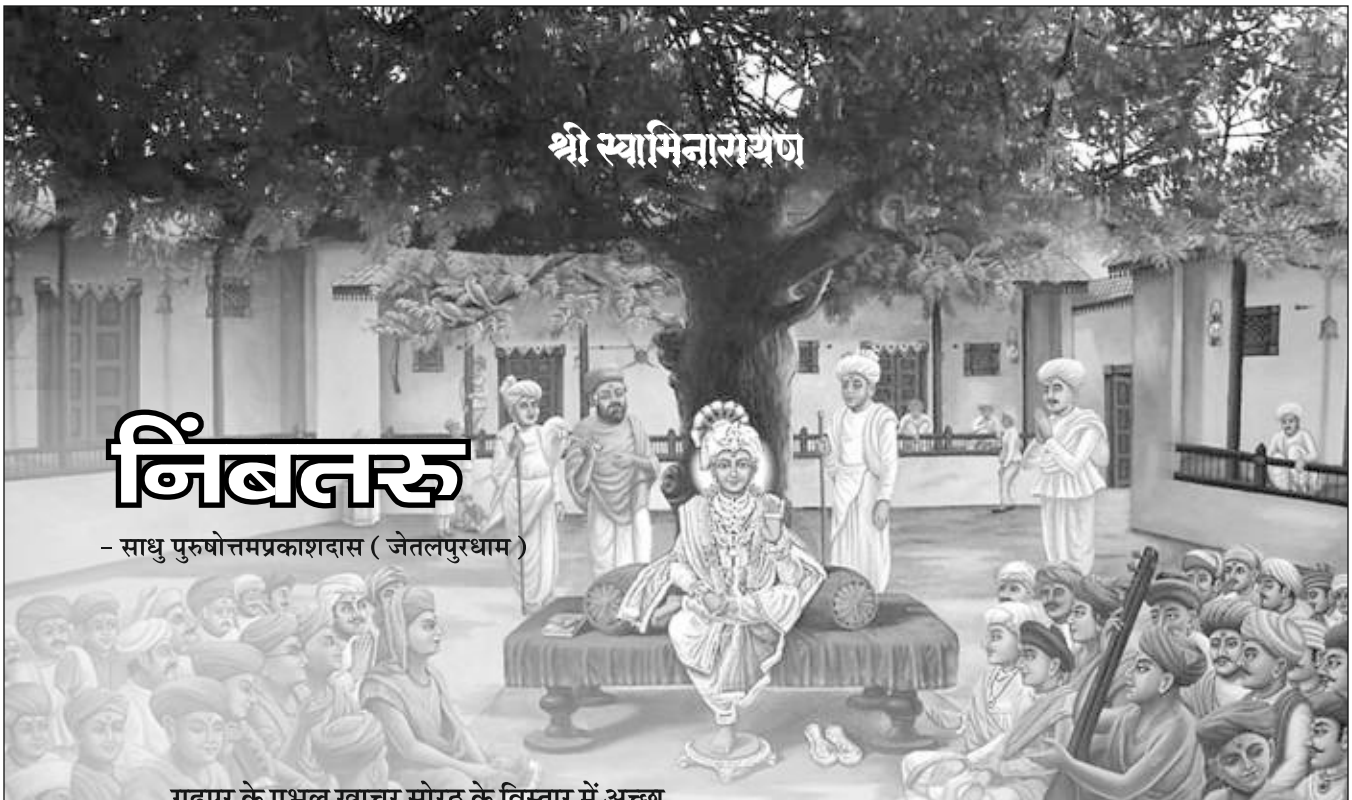

निंबतरु

– साधु पुरुषोत्तमप्रकाशदास (जेतलपुरधाम)

गढपुर के एभल खाचर सोरठ के विस्तार में अच्छा दूधदेने वाली भेंश को खरीदने के लिए इस गाँव से उस गाँव धूम रहे हैं, उसी समय उमेज गाँव की वाडी में दोपहर के समय विश्राम करने के लिए तथा घोडे को पानी पिलाने के लिए प्रवेश करते हैं। वहाँ एक किसान गर्मी में सिचाई के लिये कोश से पानी निकाल रहा था। पानी नाली से खेत में जा रहा था। उसी समय एभल खाचर का घोडा नाली में पानी पीने लगा। वहाँ से थोडी दूर पर एक निंबवृक्ष के नीचे दो सन्यासी विठ्ठलानंद तथा बालानंद बैठे थे। जो पूर्वाश्रम में पिता-पुत्र थे। समर्थ महापुरुष आत्मानंद स्वामी के शिष्य थे। गुरुकी कृपा से दोनो सन्यासियों को आत्मज्ञान हो गया था। इससे वे तीनो काल को यथार्थरुप से जान लेते थे। वे दोनो महापुरुष किसी दिव्यलोक की वात कर रहे थे उस में से विठ्ठलानंद एक कंकड उठाकर नीम का जड में फेकते हुए कहे कि हमें ऐसा दिखाई दे रहा है कि इस निंब वृक्ष के नीचे साक्षात् प्रगट ब्रह्म विराजमान होंगे। ऐसा इस वृक्ष का भविष्य दिखाई दे रहा है। कारण यह कि इस वृक्ष में कोई मुक्त आत्मा दिखाई दे रहा है। जहाँ पर ऐसी आत्मा हो वहाँ परमात्मा अवश्य पधारते हैं।

एभल खाचर की नजर विठ्ठलानंद स्वामी पर पड़ी तथा उनके शब्द को सुन लिये। अब उनके मन में संकल्प विकल्प होने लगा। पुण्यशाली विचार आने लगे। इस वृक्ष के नीचे भगवान विराजमान होंगे। अब सोचने लगे कि यह वृक्ष के लिये सोचने लगे। प्रभु की कृपा से ऐसा संयोग तथा सात्विक विचार पकडनेवाला परमात्मा को प्राप्त कर लेता है। मन को मजबूत किये। नींबवृक्ष को लेजाना है लेकिन गढपुर दूर है। लेकिन समाज उपहांस करेगा। बापू गये भैंस लेने और नींबवृक्ष लेकर आये यहाँ कहाँ नींबवृक्ष की कमी है। दूसेर राजा मेरी मजाक उडायेंगे। ऐसे अनेक विचार मन में आने लगे।

अब वे मन को मजबूत किये और सोचते हुये कि साधु का वचन है कि इस वृक्ष के नीचे भगवान विराजमान होंगे और हमारा गढडा तथा हम धन्य हो जायेंगे। ऐसे घोर कलिकाल में भगवान घर आये, इससे बड़ी बात क्या हो सकती है ? यदि भगवान मिलने हों तो भैंस का विचार जाने देना चाहिये।

भगवान आयेंगे तो सभी मनोरथ पूरा हो जायेगा। आगे-पीछे की कई पीढीयों का उद्धार हो जायेगा। भूतकाल में बहुत भूल किये हैं। अब भूल नहीं करेंगे। नींबवृक्ष को लेजाना है। नींबवृक्ष भले कडवा हो लेकिन

हमारे लिये तो शहद से भी अधिक मीठा है। नींबवृक्ष को लेजाने का विचार पक्का कर लिये । इस बात को विठ्ठलानंको पता चल गया। अब वे वहाँ से एभल खाचर के विचारों में दृढता समझकर जय सच्चिदानंद कहकर अपने मार्ग पर आगे चले । एभल खाचर आत्मा को साक्षी मानकर सन्यासी को हाथ जोड़कर वंदन किये।

एभल खाचर किसान से उस निंब वृक्ष को लेजाने की आज्ञा मांगी । किसान की बाडी (बगीजे) में तो अनेकों निंबवृक्ष थे । लेकिन वह किसान विठ्ठलानंद स्वामी की वात से अज्ञात था। एभल खाचर के उस वृक्ष के मांगे जाने पर वह मना नहीं करता है और कहता है कि अनेक निंब वृक्ष ले जाइये, एक की क्या बात है ?

किसान से फावडा (परशु) लेकर मिट्टी के साथ खोदकर बाहर निकाले बड़ी चतुराई के साथ एक तगाडा में रखकर किसान को राम-राम कहकर अपने साथ लेकर चल दिये । चलते समय कहते गये कि जिस भरवाड के यहाँ से भैंस खरीदने की वात किये थे वह अभी नहीं लेगें। नींब वृक्ष को साथ लेकर घर की तरफ रवाना हो गये। कुछ दिन तक माटी-पानी से उस नींबवृक्ष को सींचते रहे। मन में संकल्प किये कि जब तक इसमें नई पत्ती नहीं आयेगी तब तक अन्न ग्रहण नहीं करेंगे । दरबार गढ से बाहर भी नहीं जायेंगे । समय-समय पर खात-पानी-माटी डालकर रात दिन उसका ध्यान देने लगे । प्रतिदिन प्रार्थना करते कि प्रभु ! आप इस में विराजमन होकर हमारी पीढी का उद्धार कीजियेगा।

कुछ दिन के बाद प्रातः उठकर देखे तो नई पत्तियां निकली हुई है, यह देखकर मन आनंदित होकर नाचने लगा। जो उन्होंने संकल्प किया था पूरा समझकर पारणा किये।

बाद में उन्हें ऐसा होने लगा कि जैसे छपैया में प्रगट हुए अक्षरधाम के अधिपति प्रभु घनश्याम के साथ नित्य बात कर रहे हो।

एभल खाचर के मन में ऐसा होने लाग कि अब प्रभु कितना जल्दी आयें इस भाव से श्रीमद् भागवत महापुराण का पठन उसी नींबवृक्ष के नीचे करने लगे।

दिन दूनी रात चौगुनी वह नींब वृक्ष बढने लगा। उसकी चौतरफी छाया घटादार बनी इस तरह फैली कि सूर्य की किरण भी छन कर नीचे आती थी।

एकवार कारियाणी के मांचा खाचर के यहाँ भगवान स्वामिनारायण पधारे, यह सुनकर उनकी प्रसन्नता की सीमा न रही इसके बाद प्रभु स्वयं गढडा पधारे और वही पर अपना स्थाई निवास उसी नींबवृक्ष के नीचे किये। यह विठ्ठलानंद की वात को सत्य कर दिये ।

वचनामृत वडताल-१२ वें श्रीहरि एकवार ''धन्य वृन्दावन वासी वडनी छाया रे ज्यां हरि बेसता'' इस कीर्तन का गान संतो से करवाये और बोले कि ''परमेश्वर का योग प्राप्त करके वृक्ष का जन्म हो वह भी कृतार्थ हो गया। जिस वृक्ष के नीचे प्रभु बैठे हों वह वृक्ष भी परमपद का अधिकारी कहा जायेगा।

अपने संप्रदाय में अनेक वृक्षों का वर्णन है जिस में मुक्तात्मा के रुप में दर्शन होता है। ए सभी वृक्ष श्रीजी महाराज के साक्षी होने का प्रमाण देते हैं । ऐसे मुक्तात्माओं के दर्शन से सभी पाप नष्ट होते हैं इसके साथ ही भगवान का साक्षात्कार भी होता है। ऐसे मुक्तात्माओं की छाया में खड़ा होकर वंदन करने से सभी प्रकार की मनोकामना पूरी होती है। अपनी बड़ी भाग्य यह है कि इतने वर्ष बीत जाने पर भी ऐसे मुक्तों को श्रीहरि आज भी उसी रुप में रखे हुए हैं। इस प्रकार की जानकारी मिलती है कि आज भी अक्षरधाम के तीन सौ जितने मुक्त वृक्ष के रुप में दर्शन देते रहते हैं। ऐसे प्रगट मुक्तों के दर्शन का लाभ लेना चाहिए। ऐसे मुक्तात्मा स्वरुप वृक्षो के दर्शन-पूजन से भगवान प्रसन्न होते हैं।

अनेकों तीर्थों में महान मुक्तात्मारुपी वृक्षो की स्मरणिका जेतलपुर की फूलवाडी में ''मौलश्री'' जिसकी छाया में विराजमान होकर वचनामृत कहे तथा अनेकों सभा किये । हाइवे के ऊपर इमलीका वृक्ष,

पेईज नं. ११

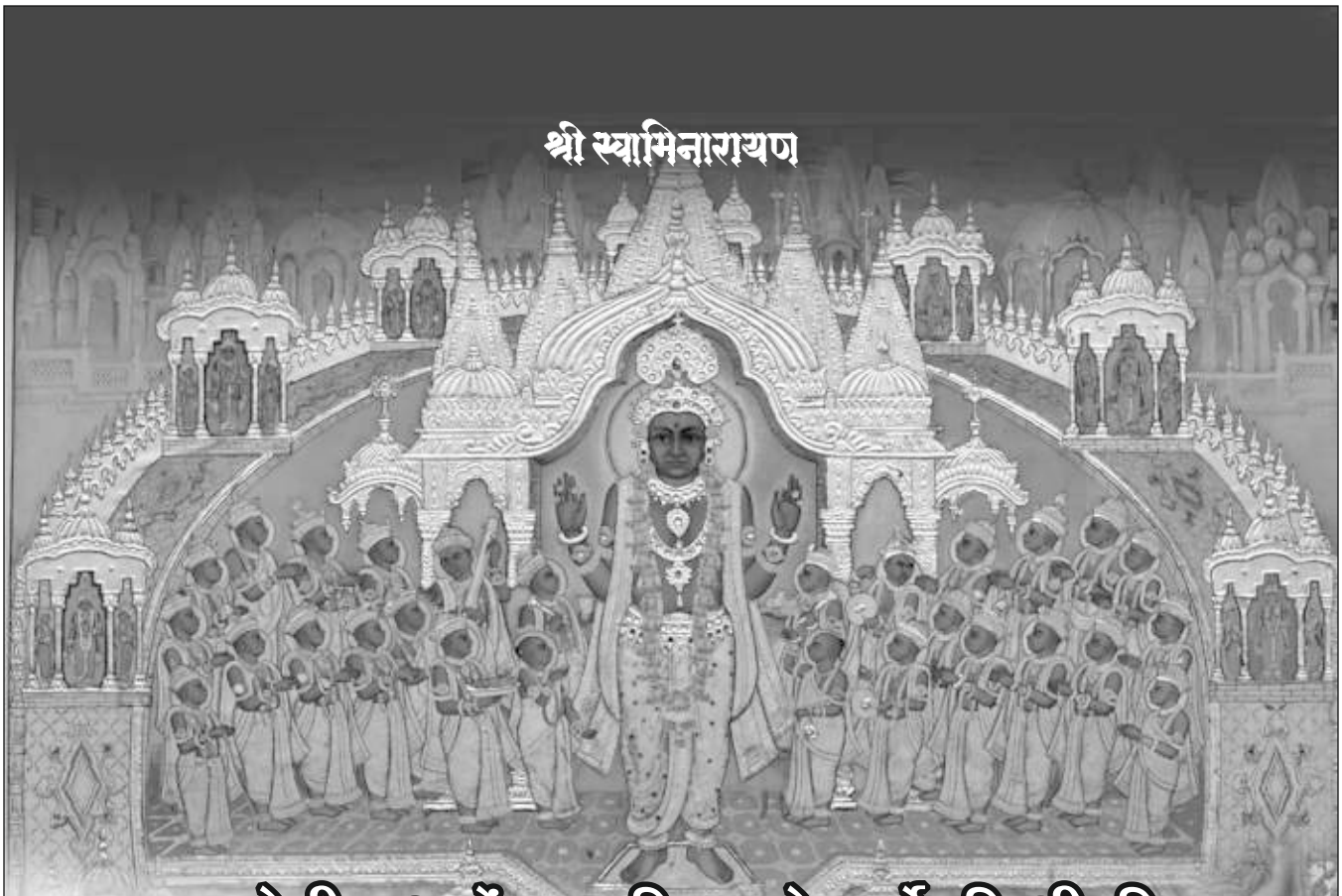

मुक्तोनी सभामें सदा बिराजते सर्वोपरि श्रीहरि

– शा. स्वा. निर्गुणदासजी (अमदावाद)

॥ प्रहर्षणीयवृत्तम् ॥

मुक्तानां सदसि सदा विराजमानं पूर्णेन्दुप्रवरमुखाब्जपत्रनेत्रम् ।
मन्दारस्थलरुहकुन्दसारहारं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥१॥
अम्भोजध्वजकलशांकुशोर्ध्वरेखागोपदप्रमुखसुक्ष्मपादपद्मम् ।
सामोदभ्रमरविगुंजितावचूलं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥२॥
भक्तेभ्यो विहितसबीजसांख्ययोगं प्रावारप्रचलितकंचुकाभिरामम् ।
श्रीखण्डप्रवरतमालपत्रमीशं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥३॥
विद्योतन्मणिमयहेमकुण्डलश्रीकर्णाग्रोत्तमकुसुमावतंसरम्यम् ।
श्रीवत्सोल्लसितमुजान्तरं सदीशं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥४॥
संसारप्रशमनकारणप्रतापं विभ्राणं सुरुचिरमौक्तिकीं च मालाम् ।
हस्ताग्रे सुललितमालिकां दघानं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥५॥
शान्तानां विदलितमानमत्सराणां कामादिप्रबलविपक्षनिर्जयानाम् ।
साघूनामनिशमवेक्षणीयरूपं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥६॥
वेदान्तैरूदितसुकीर्तिमाप्तकामं जुष्ठांघ्रिविजितविदुषणैर्मुनिन्द्रैः ।
ब्रह्माण्डस्थपतिसुरेश्वरैकनाथं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥७॥
रम्याणां विमलसुवर्णभूषणानां श्रीमत्तामवयवशोभया दघानम् ।
धर्मान्तप्रभवनवीनमेघनीलं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥८॥
॥ इति अचिन्त्यानन्दवर्णिविरचितं धर्मनन्दनाष्टकम् समाप्तम् ॥

इस पृथ्वी पर देह धारण करके प्रकट हुये सर्व अवतारों के अवतारी परब्रह्म परमात्मा भगवान श्री स्वामिनारायण का अवतार दुर्वासा मुनि के श्राप के कारण हुआ था . इसका समाचार ऋषि मुनियों को मिला कि वे लोग पंच विषयों का त्याग करके श्रीहरि के दिव्य चरणों में लग गये थे। जो भी परम हंस थे वे सभी श्रीहरि के जैसे ही थे। उस समय के नंद संत अपनी प्रौढ योग्यता के कारण अपने इष्टदेव कोजिसरुप में देखे तथा जैसा समझे वह सभी अपने छन्द में अवतरित कर लिये। यहाँ पर अचिन्त्यानंद वर्णी द्वारा रचित अष्टक को दर्शित कर रहे हैं। वर्णिराज अपने अष्टक में धर्मनंदन भगवान श्रीहरि से प्रार्थना करते हैं। यह अष्टक प्रहर्षणी छन्द में है, जो सुरक्षा का भाव प्रगट करता है।

मुक्तानां सदसि सदा विराजमानं पूर्णेन्दुप्रवरमुखाब्जपत्रनेत्रम् ।
मन्दारस्थलरुहकुन्दसारहारं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥१॥

अक्षर मुक्तों की सभा में सिंहासन के ऊपर सदा विराजमान शरद पूर्णिमा चन्द्रमा के समान सरोवर में

खिळे हुये कलम की पंखुडी के जैसा सुंन्दर नेत्र है जिस का ऐसे श्रीहरि आप हो । आपके कंठमें गंधमादन पर्वत के सरोवर में खिला हुआ तथा सुवर्ण के समान तेजस्वी कान्तिवाले कमल को धारण किये हैं । ऐसे धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद विप्र के पुत्र है श्रीहरि मैं आपकी शरणागति होकर प्रार्थना करता हूँ ॥१॥

अम्भोजध्वजकलशांकुशोर्ध्वरेखागोपदप्रमुखसुक्ष्मपादपद्मम् ।
सामोदभ्रमरविगुंजितावचूलं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥२॥

जिसके दिव्य चरणकमल में आकाश, ध्वज, कलश, अंकुश, ऊर्ध्व रेखा, गोपद इत्यादि चिन्हों से अंकित आप का सूक्ष्म चरण कमल है । श्वेत चन्द्र के जैसा उज्जवल वस्त्रों को धारण किये हैं । जिसे सुंदर पुष्प समझखर भ्रमट चारो तरफ गुंजारव कर रहे हैं । ऐसे धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद विप्र के पुत्र श्रीहरि मैं आपके चरणों की शरणागति होकर आपकी प्रार्थना करता हूँ ॥२॥

भक्तेभ्यो विहितसबीजसांख्ययोगं प्रावारप्रचलितकंचुकाभिरामम् ।
श्रीखण्डप्रवरतमालपत्रमीशं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥३॥

अपनी शरण में आये हुये ऐसे एकान्तिक भक्तों को सांख्ययोग शास्त्रों के रहस्य को - यम - नियम - आसन - प्राणायाम - प्रत्याहार धारणा - ध्यान - समाधिइत्यादि को सभा में समझाते तथा प्रवाल के समान सुंदर वस्त्रों से सुशोभित मानो तमालपत्र के ऊपर श्वेत हिमखंड जम गया हो ऐसा लगता है । ऐसे धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद विप्र के पुत्र हे श्रीहरि आपके चरणों की मैं प्रार्थना करता हूँ ॥३॥

विद्योतन्मणिमयहेमकुण्डलश्रीकर्णाग्रोत्तमकुसुमावतंसरम्यम् ।
श्रीवत्सोल्लसितमुजान्तरं सदीशं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥४॥

आकाश में जैसे बिजली की चमक होती है इसी तरह चमकती हुई दिव्य सूर्यकान्तमणि तथा चन्द्रकान्तमणि से सुशोभित सुवर्णकुंडल आपके कान के अग्रभाग में शोभायमान रहे हैं । मस्तक के ऊपर धारण की हुई पगडी में सुगन्धित पुष्प की शोभा निखर रही है । श्रीवत्स के चिन्ह से चिन्हित वक्षस्थल के दोनो तरफ की दृढ भुजाओं से सत् पुरुषों की तथा अपने भक्तों की रक्षा होती है । ऐसे धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद विप्र के पुत्र श्रीहरि मैं आपके चरणों की शरणागति होकर आपकी प्रार्थना करता हूँ ॥४॥

संसारप्रशमनकारणप्रतापं विभ्राणं सुरुचिरमौक्तिकीं च मालाम् ।
हस्ताग्रे सुललितमालिकां दधानं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥५॥

आपकी शरण में आये हुये जीवमात्र के जन्म-मृत्यु रुपी संसार के दुःखो को नाश करने में आप समर्थ है । मन को रुचिकर लगने वाली मोतियों की माला आपके कंठ को सुशोभित कर रही है । आप अपने दाहिने हाथ में तुलसीकी काष्ठमाला को धारण किये हुये हैं । ऐसे धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद के पुत्र हे श्रीहरि आप के चरणों की शरणागति होकर मैं प्रार्थना करता हूँ ॥५॥

शान्तानां विदलितमानमत्सराणां कामादिप्रबलविपक्षनिर्जयानाम् ।
साधूनामनिशमवेक्षणीयरूपं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥६॥

आपके दिव्य स्वरुप का दर्शन करने वाले भक्तों के हृदय में सुख शान्ति का नाश करने वाले कामादिक अन्तःशत्रुओं का नाश करके मन में सुख शान्ति-शीतलता प्रदान करते हैं । मोक्ष की इच्छावाला जो भी सज्जन पुरुष हों वे आपको निर्निमेष भाव से निरन्तर देखेत रहते हैं । ऐसे धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद विप्र के पुत्र श्रीहरि मैं आपके चरणों की शरणागति होकर आपकी प्रार्थना करता हूँ ॥६॥

वेदान्तैरूदितसुकीर्तिमाप्तकामं जुष्टांघ्रिविजितविदुषणैर्मुनिन्द्रैः ।
ब्रह्माण्डस्थपतिसुरेश्वरैकनाथं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥७॥

हे श्रीहरि आपकी कीर्ति तथा यशगान सदा वेदान्त शास्त्र करते हैं । पूर्णकाम हुये जीवमात्र के लिये दूषणरुप काम क्रोधादिक अन्तःशत्रुओं को जीतने वाले ऐसे ऋषिमति सदा आपके चरण कमल का सेवन करते रहते हैं । अनंत कोटि ब्रह्मांड के अधिष्ठाता देव-दानव-मनुज सभी के एकमात्र नियन्ता ऐसे धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद विप्र के पुत्र श्रीहरि मैं आपके चरणों की शरणागति होकर आपकी प्रार्थना करता हूँ ॥७॥

रम्याणां विमलसुवर्णभूषणानां श्रीमत्तामवयवशोभया दधानम् ।
धर्मान्तप्रभवनवीनमेघनीलं धर्मांगप्रभवमहं हरिं प्रपदये ॥८॥

हे हरि आपके अंगो के अवयव इतने सुंदर है कि कंठ में सुवर्ण का भूषण (हार) कान में कुंडल इत्यादि सुशोभित हो रहे हैं । वर्षाऋतु में नूतन-नीलमेघ के समान नीलवर्ण की शरीर वाले धर्मऋषि के अवतार हरिप्रसाद विप्र के पुत्र हे श्रीहरि मैं आपके चरणों की शरणागति होकर प्रार्थना करता हूँ ॥८॥

इष्टदेव का सावधानीपूर्वक महिमा के साथ जिसे निश्चय रहेगा वही परमपद को प्राप्त करेगा

- जयंतीभाई के. सोनी (मेमनगर)

भगवान के साथ जिस में दृढ निश्चय न हो उसे नपुंसक समझना । क्योंकि उसके वचन से किसी का उद्धार नहीं होनेवाला है । चाहे वह कितना भी गीता-भागवत सुनाता रहे।(व.-५२)

व्रत, तप, नियम, सत्संग, नवधाभक्ति, ध्यान इत्यादि करते हैं लेकिन श्रीजी की प्रसन्नता के लिये कितना करते हैं वह प्रश्न है ? प्र. ६२ के वचनामृत में भगवान स्वामिनारायण ने संबन्धी की व्याख्या की है। जेने भगवानना स्वरुपनो यथार्थ निश्चय होय तेनेज भगवाननो संबंधकहेवाय । इसलिये जिसके साथ जिसका संबन्धहो उसमें वह गुण उतरे भगवान के संबन्धसे भगवान का कल्याणकारी गुण आता है। भक्त भी भगवान के संबन्धसे अति समर्थ हो जाता है। यथार्थ आज्ञा का पालन करनेवाला तथा नवधा भक्ति से युक्त भक्त इसी जन्म में मोक्ष को प्राप्त करलेता है।

भगवान के यथार्थ निश्चय के विना चाहे वह कितनाभी नियम सत्संग, नवधा भक्ति इत्यादि करता हो तो भी उसे गुण बुद्धिवाला ही कहा जायेगा। ऐसे भक्तों का आत्यंतिक कल्याण यथार्थ निश्चय के बाद ही होता है। जिसके हृदय में यथार्थ निश्चय होगा वही परमेश्वर को प्राप्त कर सकेगा।

(१) सर्व प्रथम भगवान श्री स्वामिनारायण का सर्वोपरिपना समझना : श्रीजी महाराज जीवकोटी, माया कोटी ईस्वर कोटी, ब्रह्मकोटी, अक्षर कोटी से परे हैं। सर्व अवतार के अवतारी है। सभी के नियन्ता है। सर्व कारण के कारण है । यही वात श्रीजी महाराजने अमदावाद के ७ वें वचनामृत में भी की है । सर्वपोरि भगवान मैं ही हूँ। छोटे बड़े सभी मेरे ही अवतार है।

(२) भगवान का सगुणपना - निर्गुणपना को समझना पडेगा - पुरुषोत्तम नारायण का सगुण - निर्गुणपना की वात जब आवे तब पुरुषोत्तम नारायण का तेज अर्थात् भगवान के अन्वय स्वरुप का सगुण-निर्गुणपना समझना चाहिये।

निर्गुणपना : भगवान की अन्वयशक्ति जो तेज उससे जीव कोटी, ईश्वरकोटी, ब्रह्मकोटी, स्वयं कोटी, अभर कोटी इत्यादि सभी अपनी क्रिया के लिये समर्थ होते हैं। इसलिये उसे अन्वय स्वरुप कहा जायेगा। श्रीजी महाराज तो उसतेज के भी कारण है। इसलिये उन्हें सर्व कारण का कारण कहा गया है । इसतरह निर्गुणपना सभी कोटि में व्याप्त होने से अत्यंत निर्लेप, असंगी, सूक्ष्म तथा अति प्रकाश युक्त कहा गया है।

सगुणपना : श्रीजी महाराज के तेज का दूसरा लक्षण यह है कि अष्टावरण से युक्त अनंत कोटि ब्रह्मांड, इश्वर कोटी, ब्रह्म कोटी तथा अक्षरकोटी सभी को अपने अन्वय शक्ति से आत्मसात्-करते हुये सभी से अलग भी है।

(३) भगवान का अन्वय-व्यतिरेक स्वरुप समझना : वह स्वरुप वास्तव में क्या है ? भगवान श्री स्वामिनारायण का एक ही दिव्य स्वरुप अपने अक्षरधाम में दिव्य मुक्तों के साथ रहता है।(लोया-४ वचनामृत) ईसी को व्यतिरेक स्वरुप कहा गयाहै । जब कि श्रीजी महाराज जीव कोटि, ईश्वर कोटी, ब्रह्म कोटि, अक्षर कोटि में अपने तेज से रहते हैं। इसी को अन्वय स्वरुप कहते हैं। इस तरह अक्षरधाम में मूलरुप वह व्यतिरेक स्वरुप तथा उन्हीं का जो तेज रुप है वही श्रीजी महाराज का अन्वयस्वरुप कहा जायेगा।

(४) महाराज को कर्ता-अकर्ता अन्यथा कर्ता पन वाला समझना चाहिए : कर्तात्पना : प्रथण उत्पत्ति के समय भगवान जिस अक्षर के सामने करते हैं अर्थात् अन्तर्यामी शक्ति से प्रेरणा करते हैं । इस तरह उत्पत्ति स्थिति तथा प्रलय सभी स्वयं के इच्छा से करते हैं इसी को कर्ता कहते हैं।

अकर्ता : स्वयं मूल अक्षर द्वारा जो कार्य कराये उसे अकर्ता कहेंगे

अन्यथा कर्ता : मूल अक्षर द्वारा की गई सृष्टि में स्वयं किसी प्रकार की नीति-नियम के विना स्वतंत्र कार्य करने में समर्थ है। इसे अन्यथा कर्तापना कहा जायेगा। जिस तरह अक्षरधाम के विना भी अपने मुक्तों को धारण करने में समर्थ है। अर्थात मुक्तों को अपनी मूर्ति में लीन करके स्वयं स्वराट होकर एकाकी विराजमान रहते हैं, यही महाराज का अन्यथा कर्तापना है।

(५) अवतार - अवतारी भेद - भगवान अपनी अन्वय शक्ति से प्रधानपुरुष, मूल पुरुष - महापुरुष या प्रकृतिपुरुष ये तीनो एक ही हैं। विग्रह में आविर्भाव होता है। इसी को अवतार कहते हैं।

जब स्वयं पुरुषोत्तम नारायण इस पृथ्वी पर अवतार धारण करे तब वह पुरुषोत्तम स्वयं है वही अवतारी भी हैं। स्वतंत्र है, सर्व के स्वामी है, नियंता है, सर्वोपरि सर्व कारण के कारण हैं।

(६) मनुष्य भाव तथा दिव्य भाव समझना : मुनिबाबा ब्रह्मानंद स्वामी से प्रश्न किया कि प्रथम तो भगवान का निश्चय हो तथा भजन-स्मरण करते हुये भी भगवान के मनुष्य चरित्र में संशय हो जाय उस का क्या कारण ? प्रत्येक शास्त्रों में भगवान का मनुष्य स्वरुप तथा दिव्य स्वरुप का वर्णन मिलता है। इन दोनो स्वरुपों को जानकर जिसने श्रवण-मनन-करके दृढ निश्चय किया हो उसे कभी संशय नही होता ? लेकिन जिसने अच्छी तरह से निष्ठापूर्वक ज्ञान नहीं किया है, उसे निश्चय में संशय होता है। भगवान जब मनुष्य रुप धारण करते हैं तब उन्हें बालक - युवान, वृद्ध या मरजाना इत्यादि का भाव रहता है, तथा काम, क्रोध, लोभ, मोह, स्वाद, स्नेह, राग, द्वेष, इत्यादि भी दिखाई देता है। कभी किसी कार्य को पूर्ण करने में दिव्य भाव भी दिखाई देता है। तब यह समझना कि निश्चय में संशय नहीं होगा।

धाम की मूर्ति, मनुष्यमूर्ति, तथा प्रतिमामूर्ति इसमें कोई फर्क नहीं है। इसलिय प्रतिमा के विषय में दिव्य भाव, प्रत्यक्ष भाव रखना चाहिए। जब तक यह भाव नहीं आयेगा, दिव्य भाव समझने में फर्क हो तब निश्चय ही जन्म लेना पडेगा।

उपरोक्त सभी बातों को हृदय में उतारकर महाराज का सर्वोपरि स्वरुप समझने में फर्क नहीं होना चाहिए। इस तरह उपासना की जाय तो आत्यंतिक कल्याण होगा। ऐसा व्यक्ति परमपद को प्राप्त करेगा। महाराज का सर्वपोरि स्वरुप निरुपण करना ज्ञान यज्ञ है ? वृत्ति को पीछे खींचना योग यज्ञ कहा जायेगा। इस तरह करने से जीव वृद्धि को प्राप्त करता है।

अनु. पेईज नं. ७ से आगे

असलाली में वचनामृत की जगहर पर ''आंम का वृक्ष'' है।

वडताल ज्ञानवाव में इमली का वृक्ष, लोज में इमली का वृक्ष, आखा में इमली का वृक्ष, सरधार में नींब का वृक्ष, कारियाणी में नींब का वृक्ष तथा वट वृक्ष, नागडका में नींब का वृक्ष, भद्रेशी में नींबवृक्ष, मूली में नींबवृक्ष, बामरोली में रायण, जालीप्रा में इमली का वृक्ष, कमियाला में वटवृक्ष, राजकोट में बैर का वृक्ष, पोलाद में शमीका वृक्ष, गढडा में इमली का वृक्ष, पीपलाडा में वटवृक्ष, मेथाण में पीपलवृक्ष, कालवाणी में इमली का वृक्ष, वट वृक्ष, रेथड में शमीवृक्ष, करजीसण में नरखडका वृक्ष, विसनगर में आम का वृक्ष, भुज में इमली-रायण-वट मानकुवा में वट-शमी, सामत्रा में नगद, काला तालाब में इमली-वट, धमडका में शमी वृक्ष, मांडवी में वटवृक्ष ऐसे तो असंख्य संप्रदाय में दर्शन का सुख दे रहे हैं।

श्री घनश्याम महोत्सव

(एक अद्‌भुत उत्सव)

- शा.स्वा. नारायणमुनिदासजी (अमदावाद)

सर्ववतारी भगवान श्री स्वामिनारायण की असीम कृपा से तथा अमदावाद मंदिर में विराजमान श्री नरनारायणदेव की दया से श्री नरनारायणदेव के प्रांगण में आज से करीब ६५ वर्ष पूर्व अ.नि. आचार्यश्री देवेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री ने भगवान श्री स्वामिनारायण की प्रसादी की वस्तुओं का तथा बालस्वरुप का दर्शन हो सके इस हेतु से अक्षरभुवन का निर्माण कराकर उसमें प्रतिष्ठा करके अक्षरभुवन नाम सार्थक कर दिया था । समय वीतते वह भवन जीर्ण होने से प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से महंत शा. स्वामी हरिकृष्णदासजी की प्रेरणा से तथा संत भक्तों के तन, मन, धन के सहयोग से नूतन बंशीपुर पहाण के लाल पत्थर से तथा संगमरमर के पत्थर से जीर्णोद्धार किया गया है । जिसके, उद्घाटन प्रसंग पर ता. ३१-५-२०१७ से ४-६-२०१७ तक पंचदिनात्मक श्री घनश्याम महोत्सव का आयोजन किया गया था । आयोजन के अंगभूत "श्री घनश्याम लीलामृत" पंच दिनात्मक रात्रीयपारायण, अभिषेक, अन्नकूट, श्री घनश्याम

जन्मोत्सव, श्रीमन्दिर का उद्घाटन इत्यादि प्रसंगोचित कार्य किया गया था।

प्रतिदिन रात्रि में ८-१५ से ११-०० बजे तक हजारो नर-नारी कथा श्रवण का लाभ लिये थे। कथा के वक्ता स्वामी रामकृष्णदासजी थे। शहर तथा ग्राम्य विस्तार से कथा श्रोताओं के लिये बस की नि:शुक्ल व्यवस्था की गई थी। कथा के समय प्रतिदिन पूराधर्मकुल उपस्थित होकर सभी को दर्शन एवं आशीर्वाद का लाभ देता था। कथा के बाद प्रतिदिन रात्रि नास्ताकी व्यवस्था की गई थी।

ता. ४-६-१७ को प्रातः श्री घनस्याम महाराज का अभिषेक अन्नकूट का दर्शन करके सभी धन्य हो गये थे। इसी समय सायंकाल अतिथि विशेष विजय रुपाणी (मुख्यमंत्रीश्री) प.पू. आचार्य महाराजश्री के साथ बैठकर कार्यक्रम को प्रत्यक्ष दृष्टिगत किये थे। निर्माणकार्य से लेकर आजतक के उत्सव का नाटक के रुप में प्रदर्शित किया गया था। अन्त में मुख्यमंत्रीश्री तथा प.पू. आचार्य महाराजश्री के द्वारा जीर्णोध्धारित मंदिर का रीबन काटकर उद्घाटन किया गया था।

इस अवसर पर अनेकों धाम से संत पधारकर आशीर्वचन दिये थे। पू. आचार्य महाराजश्रीने इस उत्सव से सत्संग में खूब अभिवृद्धि हो ऐसा आशीर्वचन दिया था। माननीय मुख्यमंत्रीश्री मूल संप्रदाय द्वारा हो रही समाज सेवा तथा व्यसन मुक्ति से समाज का उत्थान हो रहा है ऐसा कहकर खूब प्रशंसा किये थे।

इस उत्सव में श्री नरनारायणदेव युवक मंडल की सेवा सराहनीय थी। देश विदेश में रहने वालें लाखों भक्त इन्टरनेट तथा लक्ष्य टी.वी. के माध्यम से उत्सव का आनंद लिये थे।

इस उत्सव द्वारा सत्संग में अभिवृद्धि होगी तथा भक्तों में निष्ठाका भाव बढेगा। इस से भी अधिक निष्ठा बढे श्री नरनारायणदेव के चरणों में प्रार्थना।

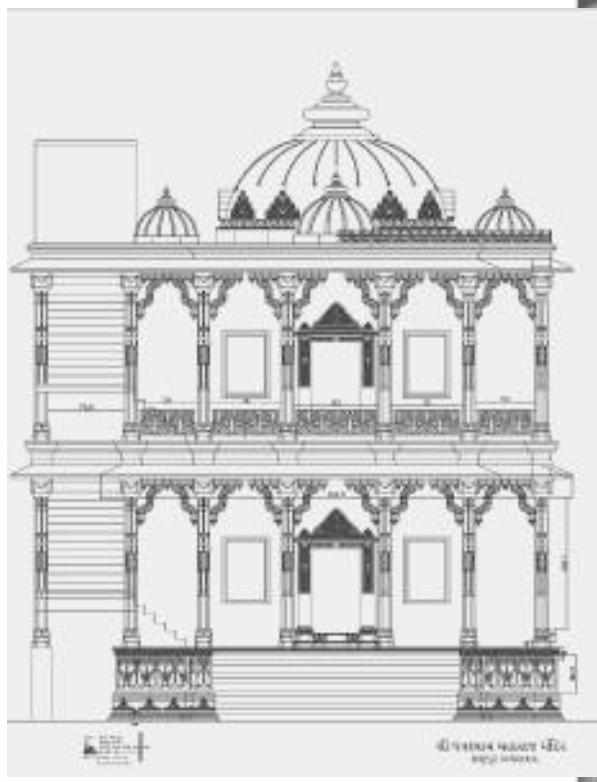

श्री स्वामिनारायण म्युझियम

श्री स्वामिनारायण म्युझियम के द्वार से

श्री नरनारायणदेव का कमाड (दरवाजा)

संवत १८७८ फाल्गुन शुक्ल-३ को भगवान श्री स्वामिनारायण ने अपने तीन संकल्प (देव, आचार्य तथा धर्मवंशी आचार्य पद का स्थान) गूढ संकल्पों में से प्रथम संकल्प की पूर्ति करके तथा धरा के ऊपर स्वामिनारायण संप्रदाय का सर्व प्रथम मंदिर अमदावाद में बनवाकर उसमें भरतखंड के राजा तथा अखंड नैष्ठिक ब्रह्मचारी ऐसे श्री नरनारायणदेव की प्रतिष्ठा की । इसके बाद बड़े स्नेह के साथ अपनी बाहों में भरकर यह हमारा ही स्वरुप है इस तरह की उद्घोषणा करके युगल मूर्ति की प्रतिष्ठी की । अपना अलौकिक ऐश्वर्य देवों में आरोपित किये तथा जीवमात्र के लिये आशीर्वचन दिये की इन देवों का जो दर्शन करेगा - पूजन करेगा उसके सभी संकल्प पूरे होंगे ।

विधिवत देव प्रतिष्ठा पूर्ण हुई उस मसय का मूल भूत कमाड-दरवाजे को इस म्युजियम में दर्शनार्थ रखा गया है । यह कमाड मात्र गर्भगृह मंदिर का ही नहीं है, वह अक्षरधामका कमाड है । सर्व प्रथम यह कमाड खोलकर श्रीहरिने मंदिर के देवों का दर्शन कराया था । इसके बाद अपने हाथों से आरती उतारी थी । वर्षो तक इस दरवाजे को स्वंय श्रीहरि का, मूलजी ब्रह्मचारी का, वासुदेवानंद ब्रह्मचारी का तथा अन्य ब्रह्मचारियों का स्पर्श है । जीवों के कल्याण हेतु यह दरवाजा महाराज ने स्वयं उद्घाटित किया था ।

इस दरवाजे के अन्दर दृष्टि करो तो श्रीहरि स्वरुप श्री नरनारायणदेव का दर्शन होता है । यहीं से अक्षरधाम के मार्ग पर जाया जायेगा । कालांतर में देव का दरवाजा सोना चांदी का होगया, फिर भी श्रीजी महाराज के करकमल का स्पर्श प्राप्त किया हुआ यह दरवाजा तो अमूल्य है । दोनो दरवाजे के बीच का जो चौखट है, उसी के ऊपर बैठकर श्रीहरिने अभय वचनों की वर्षा की थी जो आज भी वैसा ही प्रत्यक्ष दर्शित हो रहा है ।

मंदिर में उसी चौखट पर आज भी आप अपना मस्तक देखते हैं । वहां दर्शन करके श्री स्वामिनारायण म्युजियम के दरवाजे का दर्शन करने से श्री नरनारायणदेव की अखंड स्मृति हो आती है । यह दरवाजा भौतिक नहीं है परंतु अलौकिक तथा दिव्य है । जिसके दर्शनमात्र से देवप्रतिष्ठा की झांकी स्वत: हो जाती है । आत्यंतिक कल्याण को देने वाला यही दरवाजा है जिसे श्रीहरिने स्वयं खोला था । देव के अनेकों अभिषेक के समय अमृतजल इसके ऊपर पड़े है ।

हम सभी इस दरवाजे का दर्शन करके धन्यता का अनुभव करें तथा इस दरवाजे को श्रीहरिने हम सभी के लिये बनवाया था ऐसा एहसास करिए ।

- प्रो. हितेन्द्रभाई नारणभाई पटेल

श्री घनश्याम महोत्सव

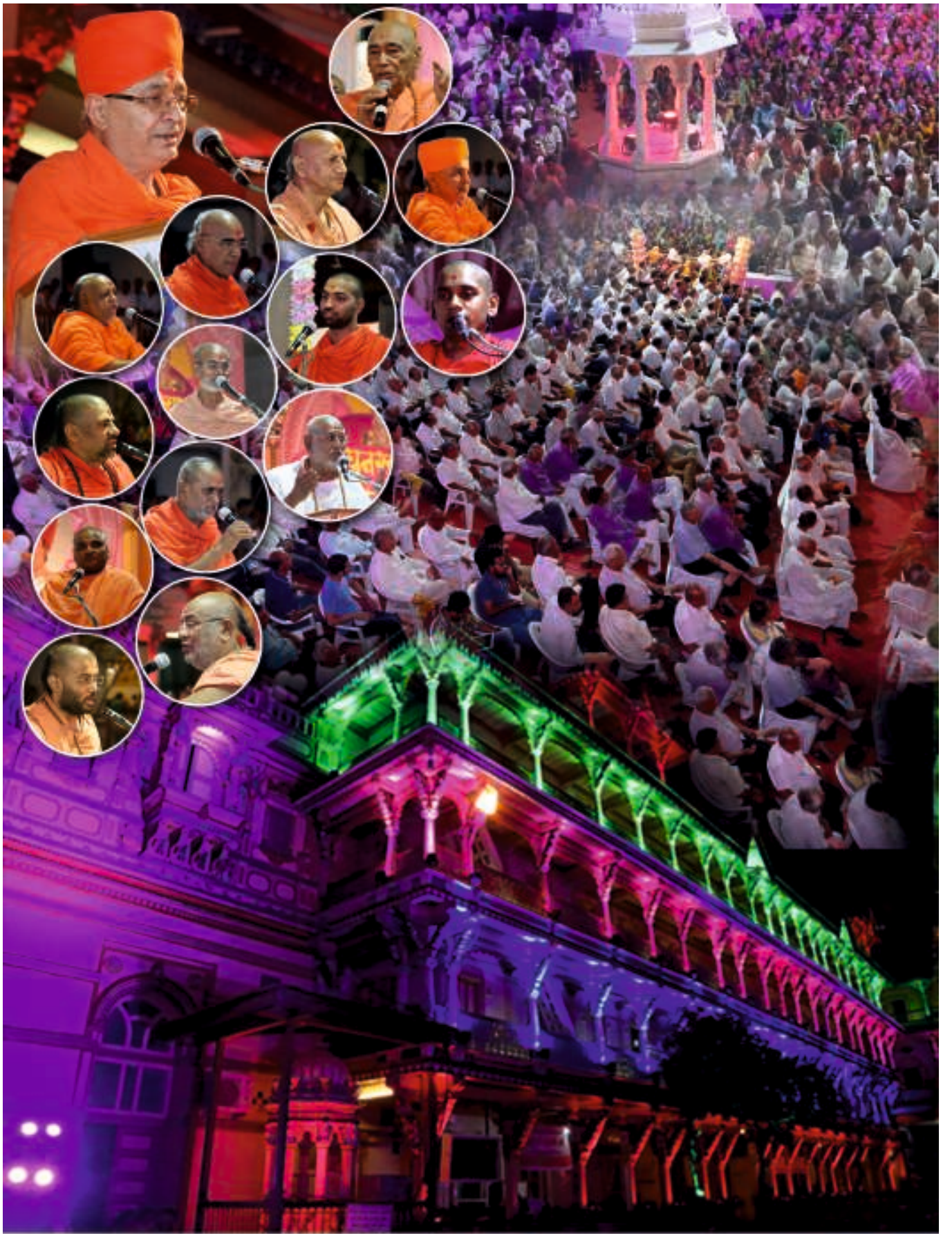

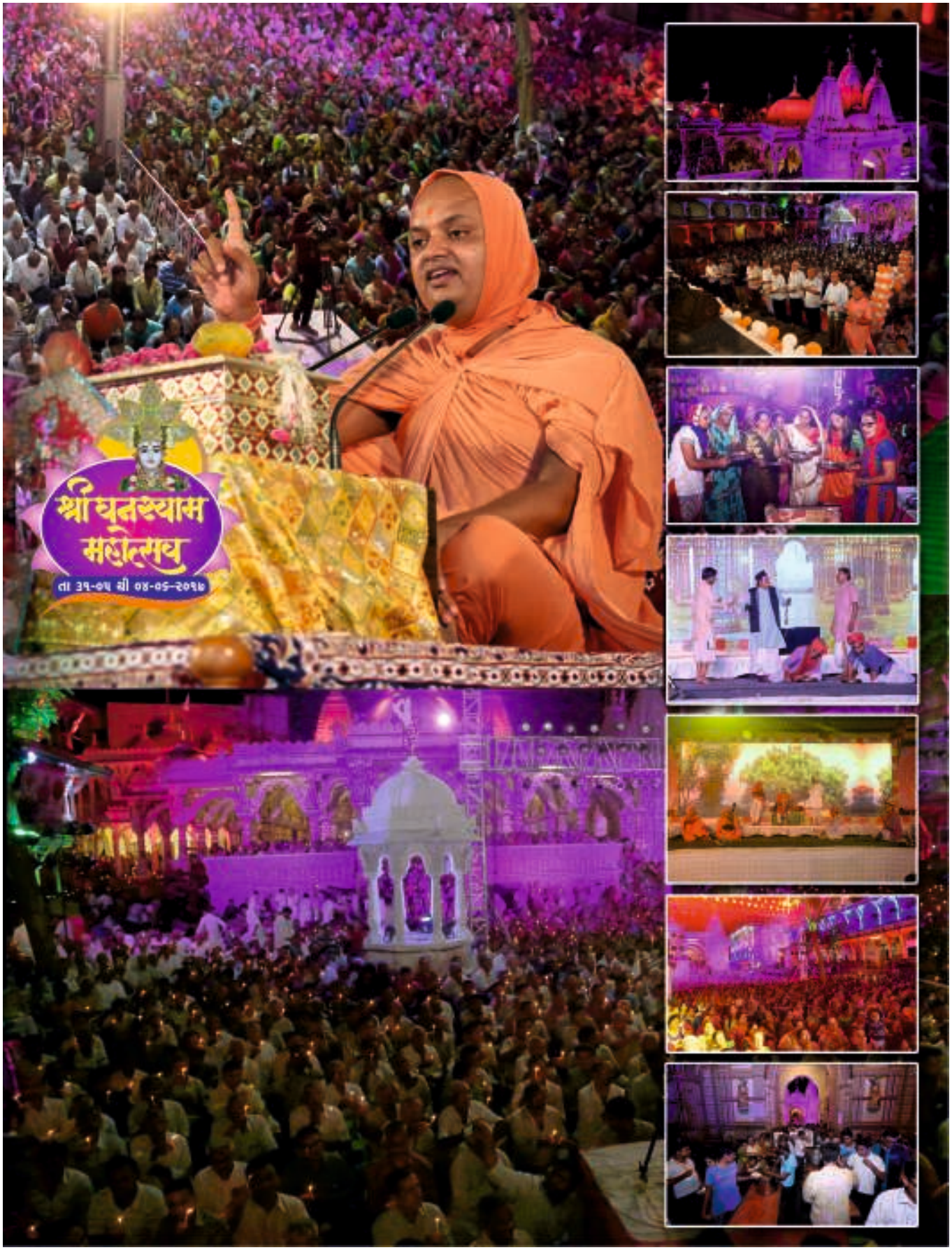

श्री घनश्याम महोत्सव
તા ૩૧-૦૫ થી ૦૪-૦૬-૨૦૧૬

श्री घनश्याम
महोत्सव

श्री स्वामिनारायण म्युजियम मे भेट देनेवालों की नामावलि-मई-१७

रु।. ५०,०००/- कांतिलाल केशरा भुडीया - फोटडी (कच्छ)

रु।. २१,०००/- रमीलाबहन गोविंदभाई पटेल - मणीनगर (कृते गोविंदभाई तथा हर्ष)

रु।. २१,०००/- पुष्पाबहन जशवंतलाल दोशी (भालजा साबह मंडल) अमदावाद।

रु।. ११,०००/- श्री स्वामिनारायण मंदिर से-२३ गांधीनगर (कृते शा. हरिप्रियदासजी स्वामी)

रु।. १०,०००/- अरविंद गोविंद हीराणी - मानकुवा (कच्छ)

रु।. ५,५००/- सुरेशभाई भगवानजीभाई परिवार प्रथम वेतन म्युजिमन में अर्पण - मालणीयाद

रु।. ५,००१/- कैलाशबहन लालभाई पटेल - उवारसदवाला - वर्तमान में गांधीनगर।

रु।. ५,०००/- मीनाबहन के. जोषी - बोपल - अमदावाद।

रु।. ५,०००/- पटेल दशरथभाई प्रहलादभाई (पूर्व ट्रस्टी सदस्य) जन्म दिन के निमित्त - जमीयतपुरावाला - अमदावाद

श्री स्वामिनारायण म्युजियम में श्री नरनारायण देव की मूर्ति के अभिषेक की नामावलि - मई-१७

ता. ०७-०५-२०१७ दशरथलाल नाथालाल मोदी (घनश्याम एजेन्सी - प्रांतिज) कृते रोहितभाई तथा दीपकभाई

ता. १४-०५-२०१७ नारणभाई परसोतमभाई पटेल - करजीसणवाला, चि. धारा भरतभाई के जन्म दिन के निमित्त।

ता. १८-०५-२०१७ गं.स्व. गौरीबहन अमृतभाई पटेल - मणीनगर (कृते जतीनभाई तथा रितेषभाई) नूतन फेक्टरी निमित्त।

ता. २३-०५-२०१७ महीर शिवजी हीराणी तथा बाला महीर हीराणी - लंदन।

सूचना :श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रति पूनम को प.पू. बड़े महाराजश्री प्रातः ११-३० को आरती उतारते हैं।

शुभ प्रसंग पर भेंट देने के योग्य अथवा व्यक्तिगत संग्रह के लिये - श्री नरनारायणदेव की प्रतिमा वाला २० ग्राम चांदी का सिक्का म्युजियम में प्राप्त होता है।

संप्रदाय में एकमात्र व्यवस्था स्वामिनारायण म्युजियम में महापूजा। महाभिषेक लिरवाने के लिए संपर्क कीजिए।

म्युजियम मोबाईल : ९८७९५ ४९५९७, प.भ. परषोत्तमभाई (दासभाई) बापुनगर : ९९२५०४२६८६

www.swaminarayanmuseum.org/com • email:swaminarayanmuseum@gmail.com

सत्संग आख्यायिका

संपादक : शास्त्री हरिकेशवदासजी (गांधीनगर)

सच्चा मित्र कैसा हो

(शास्त्री हरिप्रियदासजी, गांधीनगर)

प्रिय भक्तो ! मित्र तो बहुत होते हैं तालीवाला, लाडीवाला चुटकीवाला इत्यादि, लेकिन सच्चे मित्र की वात करते हैं।

स्वामिनारायण भगवान संतो से कहते हैं कि हे संतो ? जगत के जीवों को भगवान की कथा का कभी दिव्य अनुभव नहीं हुआ है उसका आप को अनुभव करा रहे हैं। किसके जैसा ? तो कहते हैं, गींगा तथा भ्रमर की तरह।

वात इस तरह की है कि मित्रो ! आप सभी को ख्याल होगा, गींगा गोबर काजीव है ? वह गोबर में इधर उधर होता रहता है। जगत में पुष्प के सुगंधका क्या आनंद है ? उसकी उसे खबर भी नहीं हो। गींगा की तथा भ्रमर की मित्रता हो गई भ्रमर अपनी पंख के ऊपर गींगा को बैठाकर किसी अच्छे बगीचे में घूमने के लिये ले गया। वहाँ पर भंवरे ने गींगा को एक खिले हुये फूल पर रखदिया । उससे पूछा कि कैसी सुगंधआ रही है ? नहीं, हमें तो उस गोबर की गन्धआ रही है। इसके बाद भंवरा उसे वेला के फूल पर रखा तो वहाँ भी उसे गोबर कीगंधआ रही थी । इस तरह पूरे बगीचे में सभी सुगन्धित फूलो पर बैठाया लेकिन सुगंधनहीं आई। बाद में भंवरा के मन में हुआ कि इसमें जरुर कुछ गडबड हैं। वहीं पर किसान के खेत में नाली से पानी जा रहा था उस नाली के पानी में उसे डाल दिया, उसमें डूबने लगा अब उसे निकालकर फूलों पर रखा तो उसे सुगंधआने लगी । वह कहने लगा कि कितनी सुंदर सुगंधआ रही है।

इसका कारण यह था कि उस गींगा के नांक में गोबर भर गया था। इसलिये जहाँ भी बैठता उसे गोबर की ही गंधआती थी। जब पानी में डाला तो उसके नाक में पानी चला गया और जोर से छींक आई गोबर निलक गया। गोबर की सुगंधभी चली गई, इसलिये अब उसे पुष्प सुगंधआने लगी।

मित्रों ! इस तरह जब तक जगत के विषय का गोबर मस्तिष्क में भरा रहेगा तब तक सत्संगिभूषण वांचे या भागवत वांचे सुगंधनहीं आयेगी । जब तक नाक में से कचरा नहीं निकलेगा तब तक कथा का आनंद नहीं आयेगा ।

इसके लिये संत क्या करते हैं ? स्वामिनारायण भगवान कहते हैं कि, आप लोग जीवके सच्चे मित्र हैं। जिस तरह भंवरे का मित्र गींगा था भंवरा ने अपने मित्र की नाक साफ कर दिया उसी तरह साधु पुरुष मनुष्यों के भीतर जो कुबद्धि है, जीव के भीतर जो गंदकी है उसे भक्ति में या जप में बैठा कर साफ कराते हैं। भजन में बैठिये, धुन में बैठिये, माला फेरिये, मंदिर में आइये, चातुर्मास में विशेष नियम लीजियेगा । जिस तरह भंवरे को गींगा से कुछ लेना-देना नहीं था गींगा उसे कुछ दे भी नहीं सकता। इसी तरह साधु पुरुषों को जगत के पुरुषों से कुछलेना नहीं होता। कोई अपेक्षा नहीं होती । भगवान की भजन करो और सुखी रहो । भगवान इस तरती पर जो लीला किये, जो चरित्र किये उसी के श्रवण में, कीर्तन में, भजन में कितना आनंद है ? वही देखना चाहिए । जगत का विषय तथा वासनारुपी गोबर में क्यों पडे हो ? गोबर में पडे पडे क्यों कलबला रहे हो कथा में आकर बैठो। आओ भाई कथा में बैठे, भजन करो, सत्संग करो, सुवास भजन में आइयेगी। इस तरह पामरजीव विषय रुपी कीडा से हटकर भक्त बन जाता है।

मित्रो ! इस तरह जो नि:स्वार्थ के भाव से जीव का श्रेय करे वही संत जीवका सच्चा सगा कहलायेगा। वही सच्चा मित्र है। इसीलिये कहा है कि -

संतसगा हरिजन सगा,
अंत समय में राम ।
तुलसी ये संसार में,
तीनो ठरन के काम ॥

•

शत्रु किसे कहा जायेगा

– नारायण वी. जानी (गांधीनगर)

स्वामिनारायण भगवान भक्तवत्सल है । कारण यह कि भगवान को भक्त बडे प्रिय हैं । इसका प्रमाण शिक्षापत्री है । श्रीहरि अपने भक्तों को कभी कोई तकलीफ न पडे इसके लिये शिक्षात्री में बारीक से बारीक वात को लिखें हं । जो व्यक्ति शइक्षापत्री की आज्ञा का पालन करता है वह कभी दु:खी नहीं होता ।

आज कल हम देखते हैं कि सभी जगहों पर प्रचार किया जा रहा है कि स्वच्छता रखिये । स्वच्छता रखनेवाले को दंड दिया जाता है । जब कि आज से १९० वर्ष पूर्व लिखी गई शिक्षापत्री में इष्टदेव श्रीहरिने ''जहाँ तहाँ थूंकना मना है, नरी तालाब, देवालय, बगीचा वृक्ष की छाया में मत्र मूल का त्याग नहीं करना चाहिए । एक ही स्थान पर बैठकर दातुअन करना चाहिए । इत्यादि नियमों को छोटी सी शिक्षापत्री में लिखा गया है ।

इस सन्दर्भ में एक प्रेरणादाई प्रसंग को वांचते हैं – एक वार की वात है – श्रीजी महाराज गरमी के समय में एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे । गर्मी अधिक के समय में एक गाँव से दूसरे गाँव जा रहे थे । गर्मी अधिक होने से सभी को विश्रांति करने की इच्छा हुई । दूर से एक आंब का वृक्ष दिखाई दिया । महाराजने ुसी वृक्ष के नीचे आराम करने की आज्ञा की । जब सभी उस आम वृक्ष के पास पहुँचे तो खबर पडी कि कोई व्यक्ति वृक्ष के नीचे बिगाड़ कर चला गया है । इससे आगे एक वटवृक्ष था वहाँ जाकर विश्रांति लेने के लिए संतो के साथ श्रीहरि बैठे ।

विश्रांति लेते लेते महाराजने उस आँम वृक्ष के नीचे की वात कही ''खरगोस को मारने वाला कुत्ता उसका सच्चा मित्र है तथा आंम वृक्ष के नीचे विगाड़कर जाने वाला आम का शत्रु है ।

खरगोस की वात ऐसी थी – महाराज की सवारी के साथ एक कुत्ता भी चल रहा था, उसकी नजर खरगोस पर पड़ी स्वभाववस वह खरगोस के ऊपर आक्रमण कर दिया । महाराजने यह द्रश्य देखा और जोर से आवाज दिये तो कुत्ता छोड़कर भाग गया और खरगोस इधर उधर गिरने लगा । महाराजने उसे पानी दिलाया और महाराज के देखते देखते वह मृत्यु को प्राप्त हो गया । आम की वात को इसके साथ उदाहरण देते हुये महाराज कहते हैं फिर भी वहाँ के लोकों गे यह ख्याल नहीं आया कि खरगोस का मित्र कैसे ? आमका शत्रु वह मनुष्य कैसे ? इस वात को स्पष्ट करने के लिए भक्तलोग महाराज से विन्ती करने लगे कि हे प्रभु इस वात को विस्तारपूर्वक समझाइये ।

भक्तवत्सल श्रीहरि मंद हास करते हुए भक्तों से कहने लगे – हे भक्तों ! कुत्ता जाति स्वभाव के धारण खरगोस के उपर प्रहार किया लेकिन कुत्ते के कारण ही खरगोस को हमारे हाथों से पानी मिला और उसकी मृत्यु हमारे सामने हुई, इससे उस जीव का कल्याण हो गया । अत– खरगोस कुत्ते का मित्र कहा जायेगा । दूसरी वात यह कि हमलोग उस आम वृक्ष के नीचे जाकर विश्राम करेगें । लेकिन उस वृक्ष के नीचे कोई व्यक्ति विगाड़ करके चला गया था । इसलिये उस वृक्ष के नीचे हमलोगं विश्रांति नहीं लिए । परिणाम स्वरुप उस आंम वृक्ष का कल्याण नहीं हुआ । उसके नीचे रुकते तो उस वृक्ष का कल्याण हो जाता । इतने संत, भक्त तथा हमारी विश्रांति की सेवा वह आम कर सका होता । लेकिन उसका कोई शत्रु उस सुखद छाया में आखर विगाड़ कर दिया जिससे उसका कल्याण बाधित हो गया । जीव का मोक्ष को विगाड़े वह शत्रु ।

श्रीहरि के मुख से वह व्यक्ति आंम का शत्रु ऐसी प्रतिष्ठा मिली । इसके साथ ही सभी संत–भक्तों के निंदा का पात्र हुआ । इस तरह के दु:ख को देखकर तथा ऐसा दु:क दूसरे को देखने को न मिले इसलिये भक्तवत्सल श्रीहरिने अपने भक्तों के सुख के लिए इस तरह की अनेकों आज्ञा की है ।

बालमित्रो ! ख्याल आ गया होगा कि श्रीहरि शिक्षापत्री में जो आज्ञा किये हैं उसे यदि जीवन में उतारेंगे या उस आज्ञा का पालन करेंगे तो कभी दु:खी नहीं होंगे । इसके साथ ही उनकी प्रसन्नता तो मिलेगी ही ।

भक्तिसुधा

(प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के आशीर्वचन में से)
एकादशी सत्संग सभा प्रसंग पर कालुपुर मंदिर हवेली "कोई भी व्यक्ति दिव्यता प्राप्त कर सकता है"
(संकलन : कोटक वर्षा नटवरलाल - घोडासर)

आज एक बहन हमारे निवास स्थान स्वामिनारायण बाग में मिलने आई । इन्होंने हम से पूछा कि आप भगवान की वंशज है और उनके नजदीक रहती हैं तो कितनी दिव्यता का अनुभव होता है ? जब कोई इस प्रकार की वात पूछे तो हमें कितनी ताकत मिलती है । यह भावना कितनी उत्तम कही जायेगी यह सुनकर यदि अहंकार आवे तो निश्चित ही सब कुछ व्यर्थ हो जायेगा । जब हम नजदीक हैं तो विचार करना पडेगा कि भगवान हमें ऐसी जगह पर किस लिये रखा है ? इसका कारण क्या है ? इतना बड़ा स्थान मिला है, उसके योग्य आचारण नहीं करें तो सब कुछ नष्ट हो जायेगा । अहंकार नहीं आना चाहिए । कहने का मतलब कि भगवानने जो आज्ञा किये हुये हैं वैसा पालन करे तो कोई भी दीव्यता का अनुभव कर सकती है । प्रतिदिन विचार करना पडेगा कि हम कल्याण के मार्ग पर हैं या नहीं स्वयं को पूछना पडेगा । मन मानने को तैयार नहीं होता कोई चोरी किया हुआ हो और वह मानने के लिये नहीं है कि मैं चोरी किया हूँ । उसकी चोरी को साबित करने के लिये कितना प्रमाण देना पडता है । आप अकेले बैठें हों उस समय मन में ऐसा विचार चलता रहता है कि जो भी खराब काम किये हैं उसे ढंकने का मन में सेंकडो विचार आ जाते हैं । इसे विपरीत बुद्धि कहेंगे इसे पहचानने की जरुरत है । जब पहचानेंगे तभी उसका उपचार संभव है ।

सामान्य व्यक्ति को इसकी खबर भी नहीं पडती । लेकिन सत्संग के माध्यम से अपने भीतर के दोषों को देखा जा सकता है । जब सात्विक विचार आयेगा तभी भीतर के कपट को जान सगेंगे । इसके लिये मन में ईर्ष्या, राग, द्वैष क्रोध, कपट, निंदा, इत्यादि चलती हो तो समझना चाहिए कि हम गलत रास्ते पर चल रहे हैं । दया की भावना हो तो सच्चे रास्ते पर हैं । इससे कल्याण के मार्ग पर चला जा सकता है । कोई खराब किया हो तो उसे पूछा जाय कि आप ऐसी क्यो की हैं तब सभी देखत हैं कि रोना चालू हो जाता है । वह इस लिये कि वे सावित करना चाहती हैं कि मैं ऐसी नहीं हूँ । एक असत्य को ढंकने के लिये कितना असत्य बोलना पडता है । इसका विचार करना चाहिए कि क्यों खराब बोलते हैं । वह इसलिये कि हमें लोग ऐसा क्यों बोलते हैं । यह एक प्रकार का रोग कहा जायेगा । यह जन्मोजन्म से विचार में गांठ पड गई है । यह सरलता से साफ नहीं होगी । हम किसी वस्तु को साफ करते हैं तो भी उस पर काट तो लग ही जाती है । इस लिये रोग रोज साफ करना चाहिए, धोना चाहिए । उसी तरह मन को भी प्रतिदिन साफ करने के लिए चिन्तन करते रहना चाहिए कि हम क्या कर रहे हैं, यह ठीक है या नहीं । दोष का चिन्तन आवश्यक है - बार-बार दोष का चिन्तन करते रहने से दोष निकल जायेगा, भीतर गुण का प्रकाश होगा । कुछ शुभ होने लगेगा । अपने अवगुणों का चिन्तन करते रहने से एक दिन सारे गुणों का उदय होगा और सब अच्छा सोचने का अवसर आजायेगा ।

एक मथुरा के चौबा थे । भांग पीये थे । ये निश्चित किये थे कि हमें प्रयाग जाना है । नाव को पूरी रात पतवार मारते रहे लेकिन नाव जहाँ की तहाँ रही । जब प्रातः भांग की नशा उतरी तो देखा कि नाव बंधी ही रही । वही दशा हमारी है । भजन-भक्ति-सत्संग सब कुछ करते हैं लेकिन मन को बांधकर रखते हैं । मन को जगत में बांधरखे हैं इस लिये जहाँ पहुंचना चाहिये वहाँ पहुँचते नहीं है । मन ही सभी अवरोधका कारण है । इसलिये प्रतिदिन दो मिनट - ५ मिनट एकान्त में बैठकर विचार करना चाहिए कि हमारे मन में क्या चल रहा है । या जब हम प्रातः पूजा करने बैठते हैं तब मन को खबर होती है कि हम पूजा करने वाले हैं । उस समय मन कुच समय के लिये शांत हो जाता है । जिन्हे मोक्ष की इच्छा है वे २४ घन्टे इसी तरह ध्यान करते रहना चाहिए । जिस तरह स्कूल में प्रींसीपाल प्रतिदिन अलग-अलग समय पर राउन्ड पर

निकलता है, उस समय विद्यार्थी सतर्क होकर बैठ जाते हैं। इसी तरह हमें भी अपने मन को सतत सावधान रखने की जरुरत है। जब खराब विचार आवे तब सावधान हो जाना चाहिए। अन्तःकरण (मन, बुद्धि, चित्त, अहंकार) इन्द्रियों को समझाते रहना चाहिए। यह वस्तु अच्छी नहीं है। यह मन में रखने लायक है, यह मन में नही रखने लायक है। इस तरह करते रहने से खराब विचार निकल जायेगा। बाहर की अपेक्षा अन्दर अधिक आसुरी तत्व है। वही हमें परेशान करते हैं।

हम बडे भाग्यशाली है, या हमारे सत्कर्म अच्छे हैं कि - धरती पर बैटे हैं। कितने लोग ऐसे है कि उन्हें नरनारायणदेव कौन हैं ? इसका ज्ञान ही नहीं है। हमें श्री नरनारायणदेव मिले हैं इसका स्वाभिमान रखना चाहिए, अहं नहीं। जहाँ पर साक्षात् श्री नरनारायणदेव विराजमान है, उस पृथ्वी पर बैठकर भजन- भक्ति करने का अवसर मिला है, इसका सदा अहोभाव रखना चाहिए। हमें जो मिला है उसकी रक्षा करनी है, उसे प्राप्त करते हुए आगे बढते रहना है।

●

गोपालानंद स्वामी का ऐश्वर्य

- सांख्ययोगी कोकिलाबा (सुरेन्द्रनगर)

महान संतो की जन्म भूमि तीर्थ हो जाती है। उन संतो में गोपालानंद स्वामी की जन्म भूमि टोरडा (साबरकांठा) का नाम तुरंत स्मरण हो जाता है। भक्तचिंतामणी में निष्कुलानंद स्वामीने १४२ प्रकरण में गोपालानंद स्वामी के ऐश्वर्य का रसप्रद चिन्तन किया है।

''अनुप इडर देश में धन्य धन्य टोरडा गाँव धन्य धन्य द्विज नी जात ने ज्यां उपज्या भक्त अकाम।'' योगी पूर्वजन्मना जेने वाला संगाथे बाल संगाथे प्रकट्या, खरा नाम खुशाल।''

गोपालानंद स्वामी का पूर्वाश्रम का नाम खुशाल भट्ट था। वे पूर्व में योगी थे। बाल्यावस्था से उनका प्रभाव, प्रताप वहाँ के लोगों ने अनुभव किया हुआ है। वे छोटे थे तब से जगत के बालकों जैसी प्रवृत्ति-प्रकृति नहीं थी। भगवान के प्रतिही उनकी प्रीति थी।

एवा भक्त ने खरा खुशाल,
जेने न गमी संसारी चाल।

बालपणमां रच्या भजने
बीजुं कांई गम्युं नही मने ॥

बाल्यावस्था से भजन-भक्ति में भाव रहता। एकबार बरसात में बरसा नहीं हुई। किसान लोग चिन्तित हो गये। एकाएक सभी को खुशाल भट्ट की याद आई। इसलिये खुशालभट्ट के पास गये, उनसे अपने निवेदन किये, वे सब की मानसिकता तथा आवश्यकता समझकर योग बल से बरसात करादिये।

खुशाल भट्ट गाँव में पाठशाला चलाते . बालकों को विद्या का अभ्यास कराते। विद्यार्थीयों को बहुत सारे चमत्कार बताते। एक बार एक ब्राह्मण के घर में आग लग गई। उसकी लपट दूसरे के घरोतक जाने लगी। एक बालक भी उस आग में फंस गया, सारे लोग चिल्लाने लगे, कोई रास्ता किसी को दिखाई नहीं दे रहा था। आग के भीतर से वह बालक खुशाल भट्ट की याद करने लगा और उन्हीं का नाम लेकर वह भी चिल्लाने लगा। खुशाल भट्ट अपनी पाठशाला मे थे, वहाँ से अव्यक्तरुप से उस बालक को उठाकर अपनी पाठशाला में ले गये। वहाँ से वह बालक दौडते हुए अपने घर की तरफ आ रहा था, उसे देखकर सभी को बड़ा आश्चर्य हुआ, यह कैसे हुआ, तब उस बालकने सभी कहानी सुना दी। यह सुनकर गाँव में खुशाल भट्ट के चमत्कार की चर्चा होने लगी।

खुशाल भट्ट का जीवन इतना पवित्र, सरल, उदार, मधुर था कि बालकों को बहुत प्रिय थे। इतना ही नहीं भगवान को भी खुशाल भट्ट के साथ मित्रता करके खेलने की ईच्छा हो गई। टोरडा के नजदीक प्रसिद्ध तीर्थधाम शामलाजी है। एकदिन की बात है, शामलाजी मंदिर का पुजारी रात्रि की पूजा विधिपूर्ण किया और मंदिर का द्वार बन्द किया। चौदीकार रात्रि के समय चारो तरफ पहरा दे रहे थे। भगवान शामलाजी नियम के साथ खुशाल भट्ट के साथ खेलने निकल गये। खेलते-खेलते प्रातः हो गया। द्वार खुला, मदिर का पुजारी सेवा पूजा के लिये मंदिर में प्रवेश किया। यह समझकर ठाकुरजी खुशाल भट्ट के घर से इतना तेज दोडे की एक पैर की पायल वहीं रह गई। पुजारी एक पैर की पायल सोने की खोई देखी। ऐशा बनाव जब बनता है तो शंका पुजारी के उपर जाती है। अब यह समाचार चारो तरफ

फैल गया कि एक पैर की पायल ठाकुरजी के पैर में नहीं है और पुजारी अपनी सभी सफाई में कह दिया कि मैं व्यवस्थित रात्रि के समय निरीक्षण करके दरवाजा बंद किया था, अत: आप लोग मेरे ऊपर शंका नहीं कर सकते । फिर भी लोग चुराने का आरोप उसी पर लगाये ।

लेकिन ठाकुरजी पुजारी की भक्ति को जानते थे, इसलिये उन्होंने कहा पुजारी निर्दोष है मैं खुशाल के घर खेलने गया था, वहीँ एक पायल रह गई है । वहाँ २-४ लोगों को भेंजा गया तो खुशाल ने कहा कि ठाकुरजी थोडा जल्दी में थे इसलिये एक पैर की पायल यहीं रह गई । लोगो को आश्चर्य हुआ कि यह बालक कैसा, जिसके साथ स्वयं ठाकुरजी खेलने जाते है । इस तरह खेलने की इच्छा तो सभी को होगी लेकिन भगवत्मय बनना पडेगा । संसार व्यवहार को छोडना पडेगा । इस तरह के अक्षरमुक्तों के साथ इस धरती पर प्रगट हुए थे ।

एक दिन श्रीहरि ब्राह्मण के वेश में टोरडा पहुंचे । भट्टजी हम आपको लेने आये हैं । भट्टजी सभी को प्रणाम करके चल दिये । श्रीहरि के साथ चलकर जेतलपुर पहुंचे । जेतलपुर में उत्सव चल रहा था । वहाँ जाकर महाराज अपना ब्राह्मण शरीर अदृश्य कर दिये । खुशाल भट्ट सभा में जाकर महाराज को प्रणाम किये । प्रभुने कहा भट्टजी ! आप यहाँ कैसे आये ? महाराज ! पढने आये हैं । श्रीहरिने कहा पढिये और पढाइये । महाराजने भट्टजी को सत्संग के लिये रोक लिया । एक दिन महाराजने आज्ञा की कि आप वडोदरा में जाकर सत्संग करवाइये । वहाँ पर सदा शिव ब्राह्मण के घर पर रहने की व्यवस्था की । सदाशिवने कहा, भट्टजी आपको प्रतिदिन हमारे घर ही खाना है । अन्यत्र कहीं भिक्षावृत्ति करने की जरुरत नहीं ।

निष्कुलानंद स्वामीने लिखा है कि खुशाल के साथ अदृश्यरुप से श्रीहरि भी भोजन करते थे "एक मास लगी अहोनिश जम्या हरि खुशाल हमेंश ।" बहुत सारे पंडित भी गोपालानंद स्वामी के पास आकर स्वामिनारायण भगवान के विषय में सुनते और सत्संगी हो जाते ।

कुछ समय के बाद भगवान स्वामिनारायणने भट्टजी को भागवती दीक्षा दे दी । दीक्षा देकर उनका नाम गोपालानंद स्वामी रखा । गोपालानंद स्वामी की अनेकों चमत्कारीक बाते संप्रदाय में प्रतिष्ठित है, जिन्हे पुस्तकों में लिखा गया है ।

सुंदरियाणा के हेमराजशा को भगवान स्वामिनारायण का निश्चय कराने के लिये स्वामीने अपनी नाडी के प्राण को बंद कर दिया । अब हेमराज घवडा गया, वैद्य को बुलवाया, बहुत सारी व्यवस्थायें किया लेकिन कोई परिवर्तन नहीं हुआ तो उसके अन्तर में विचार आ गया कि स्वामी मेरी परीक्षा ले रहे हैं अत: उनके चरण में गिर पडा और स्वामी स्वस्थ हो गये । उसी समय पंच वर्तमान धारण करके सत्संगी हो गया ।

स्वामी के बहुत सारे चमत्कार हैं । आषाढी पूनम की रात्रि में गाँव के सभी लोग एकत्रित होते हैं । सभी प्रकार के अनाज रसकस, तेलिंबिया, लाल मिट्टी (मनुष्य के लिये) काली मिट्टी (पशु के लिए) आधा आधा तोला सोनार के यहाँ तोली जाती है । दूसरे दिन अर्थात् आषाढ कृष्ण-१ को प्रात: काल भक्त लोग धुन करते हैं । बाद में मंदिर के शिखर के नीचे उसी वस्तुओं का तोल होता है जिस वस्तु में वृद्धि होती है वह शुभ, जिस वस्तु में घट होती है, वह अशुभ समझाजाता है । इस तरह प्रत्येक वर्ष यह क्रिया की जाती है । संप्रदाय के इतिहास में जन्म भूमियों में छपैया के बाद दूसरे नंबर पर टोरडा की भूमि है ।

सूरत के किसी पारसी गृहस्थ को एक ही पुत्र वृद्धाश्रम में गया था । उसे लेकर लोग गोपालानंद स्वामी के पास वडोदरा गये । वहाँ पर स्वामीने भगवान के प्रसाद के केले को खिलाया तो वह बोलने लगा । इस तरह गोपालानंद स्वामी के ऐश्वर्य का चमत्कार अनंत है । इतना ऐश्वर्य संपन्न होते हुए भी वे स्वंय की भगवान स्वामिनारयण का साधु कहते और भगवान तो स्वामिनारायण है । भगवान के प्रति दास भाव रखते थे ।

•

सेवा का मर्म

– कंचनबहन रणछोडभाई पटेल (नारणपुरा)

सेवा के मर्म की एक सुंदर कथा है । श्रीजी महाराज ने निष्कुलानंद स्वामी से कहा कि आप धोलेरा जाइये, एक सुंदर मंदिर बनाइये । स्वामी काफी लम्बे समय तक धोलेरा में थे । वेग गति से मंदिर का काम चल रहा था उसमें संत-

भक्त बड़े उत्साह के साथ सेवा में लगे थे । सभी संत ईटा, माटी-गारा को स्वयं उठाकर ले जाते और स्वयं जिसकी जो योग्यता होती वह काम करता । संतो के कपडे गारा-माटी वाले हो गये थे । उसी समय श्वेत वस्त्रधारी कुछ हरिभक्त दर्शन करने आये । महाराज को चरण स्पर्श करके कहने लगे कि महाराज ! आप त्यागी संत से यह काम करवा रहे है, हमें ठीक नहीं लगता । इन संतो की पूजा-करने की जगह पर आप इनसे गारा-माटी का काम करवा रहे हैं । आपके पास पैसा न हो तो हम देते हैं, आप मजदूर से यह काम करवाइये, संत-हरिभक्तों से मत करवाइये ।

मंद मंद हंसते हुये प्रभुने कहा, इस मंदिर की सेवा को सामान्य मजदूर का काम मानते हो । हम मंदिर की सेवा को उत्तम भक्ति मानते हैं । पूर्व का पुण्य हो तभी ऐसा अवसर सेवा के लिये मिलता है । हे भक्तों ! सुनो इस प्रकार की सेवा भव-ब्रह्मादिक को भी नहीं मिलती । आप लोग सफेद कपड़े बाले सेवा के मर्म को क्या जानो । मैं चाहूँ तो आकाश में से सोने का मंदिर उतार सकता हूँ । मैं चाहूँ तो धन के ढेर कर दूं । ऐसा करने पर भक्तों को सेवा करने का अवसर कहाँ मिलेगा । उनके भीतर निर्मानीपना का भाव कैसे और कब आयेगा ? परमार्थ के लिये शरीर से जो सेवा की जाय वही उत्तम सेवा है । इस प्रकार की सेवा से अन्तःकरण निर्मल होता है । इस के साथ हमारी प्रसन्नता भी मिलती है । महाराजकी इस प्रकार की वात सुनकर वह श्वेत वस्त्रधारी मर्म की भावना से जो महाराजने कहा वह समझ गया और उसी समय तगाडा उठाया गारा-माटी-ईटा लाने ले जाने में लग गया । अब उसके अन्तर में आनंद की लहर उठने लगी ।

छोटी सेवा हो या बड़ी सभी सेवा में उत्साह तथा श्रद्धा होनी चाहिए, तभी उसका फल मिलता है और वह सेवा भगवान तक पहुँचती है । इससे भगवान प्रसन्न होते हैं । इस प्रकार की सेवा से स्वयं में नम्रता आती है । करुणाका भाव प्रगट होता है । माता-पिता तथा मंदिर की सेवा का अवसर मिले तो तन, मन, धन से तत्काल तत्पर हो जाना चाहिए ।

तेजकी मूर्ति प.पू.श्री तेजेन्द्रप्रसादजी महाराजश्री के शुभ संकल्प से श्री स्वामिनारायण म्युजियम का निर्माण कार्य हुआ । उस निर्माण के समय बहने मस्तक पर डुपट्टा रखकर जो सेवा कीं वह भी एक इतिहास है, इसके साथ भक्तजन प्रचंड गर्मी की दुपहरी में गाडीयों के पार्किंग की सेवा में खडे रहे । यह सब देखकर प.पू. लालजी महाराजश्री सभी को नमन कर रहे थे और इस दृश्य को देखकर अर्थात् सेवा के मर्म को जानकर संत गदगद हो गये ।

आज भी सत्संगी बहने सेवा के मर्म को जानकर श्री स्वामिनारायण म्युजियम में प्रत्येक दिन प्रत्येक होल की सेवा बहने ही करती है । इस प्रकार की सेवा करने वाली बहनों के दर्शन से अपने भीतर भी निर्मानीपना आजेयागा ।

श्री स्वामिनारायण मासिक में प्रसिद्ध करने के लिये लेख, समाचार एवं फोटोग्राफ्स ई-मेईल से भेजने के लिए नया एड्रेस

shreeswaminarayan9@gmail.com

श्री नरनारायणदेव के २४ कलाक दर्शन के लीये देखिये वेबसाईट

www.swaminarayan.info
www.swaminarayan.in

भारतीय समय अनुसार आरती दर्शन : मंगला आरती ५-३० ● शृंगार आरती ८-०५ ● राजभोग आरती १०-१० ● संध्या आरती १८-३० ● शयन आरती २०-३०

सत्संग समाचार

अहमदाबाद श्री स्वामिनारायण मंदिर में श्री नरनारायणादिकदेवों का चंदन चर्चित दर्शन

परम कृपालु श्रीहरि की परम कृपा से तथा परम कृपालु प.पू. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से वैशाख शुक्ल-३ को श्रीनगर अमदावाद कालुपुर मंदिर में बिराजमान भरतखंड के अधिष्ठाता श्री नरनारायणदेव का चंदन चर्चित नित्य दर्शन करने में आया। पुजारी ब्रह्मचारी स्वामी राजेश्वरानंदजी तथा उनके शिष्य मंडल ने भगवान को प्रसन्न करने के लिये इस असह्य गर्मी में भगवान को शीतलता मिले इस भाव से भगवान को प्रसन्न करने का प्रयास करते रहे। सभी संत हरिभक्त भी दर्शन करके धन्यता का अनुभव कर रहे थे। अनेक सेवा करने वाले भक्त यजमान बनकर महालाभ लिये थे।

(शा.स्वा. नारायणमुनिदास)

श्री स्वामिनारायण मंदिर हर्षदकोलोनी ७ वाँ पाटोत्सव

प.पू.घ.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा गांधीनगर मंदिर के महंत शा.पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से तथा दासभाई के साथ सत्संग समाज के आयोजन से ता. २६-४ से २-५-१७ तक मंदिर का ७ वाँ पाटोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

पाटोत्सव के अन्तर्गत शा.स्वा. रामकृष्णदासजी (कोटेश्वर) ने स.गु. निष्कुलानंद स्वामी द्वारा विरचित ''धीरजाख्यान'' की रात्रि पारायण कथा की थी। कथा के मुख्य यजमान प.भ. बाबुभाई हरिभाई वघासिया परिवारने दिव्य लाभ लिया था। इस प्रसंग पर सत्संग डायरा, पोथीयात्रा, समूह महापूजा, अन्नकूट, प्रासंगिक सभा तथा महाप्रसाद की व्यवस्था की गई थी। अमदावाद, गांधीनगर, एप्रोच, नारायणघाट इत्यादि स्थानो से संत महंत पधारे थे। कथा श्रवण के लिये तथा बहनों को दर्शन का लाभ देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी भी पधारी थी।

प.पू. महाराजश्रीने बड़े उत्सव के समय बापूनगर के भक्तों से कहा निर्माणाधीन नूतन मंदिर त्वरित निर्मित हो ऐसा आशीर्वाद दिये थे। इस प्रसंग पर भूमिदान निर्माण कार्य, सिंहासन, मूर्ति इत्यादि के यजमानो ने बड़ी उदारता से दान करके धर्मकुल की तथा संतो की प्रसन्नता प्राप्त की थी।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर एप्रोच (बापुनगर) श्री नरनारायणदेव बाल मंडल का टोरडा धाम यात्रा प्रवास

प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी के शुभ आशीर्वाद से ता. २१-४-१७ को एप्रोच मंदिर द्वारा सत्संग प्रचार में रुपमबहेन, धरतीबहन, हिरलबहन, तथा चेतना बहन के प्रयास से प्रातः ८ बजे से सायंकाल ७-३० बजे तक बालिका शिबिर का आयोजन किया गया था।

दोनो आयोजनो में संस्कार सिंचन की बात की गई थी। सत्संग भक्ति के सौथ बालकों को चाकलेट, आईस्क्रीम, नास्ता, भोजन इत्यादि प्रसाद दिया गया था।

श्री नरनारायणदेव युवक मंडल द्वारा टोरडा, शामलाजी, ईडर धाम के दर्शन का आयोजन किया गया था। जिस में संतो के साथ ६०० जितने भक्त भी थे।

(गोरधनभाई वी. सीतापरा)

श्री मोरलीमनोहरदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज धोलका धाम १९० वाँ वार्षिक पाटोत्सव

श्री स्वामिनारायण मंदिर धोलका का १९० वाँ वार्षिक पाटोत्सव वैशाख शुक्ल-५ मंगलवार को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा धोलका मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से धूमधाम के साथ संपन्न किया गया था।

वार्षिक पाटोत्सव के अवसर पर ''श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचान्ह पारायण'' का आयोजन किया गया था। जिसके वक्तापद पर स्वामी वासुदेवचरणदासजी तथा शा.स्वा. अजयप्रकाशदासजी अपनी सुमधुर शैलीमें सभी को कथा का रसपान कराये थे।

इस अवसर पर अनेकों धामों से संत पधारे थे। जिस में गांधीनगर से हरिकेशवदासजी, स्वा. कृष्णवल्लभदासजी, स्वा. नौतमप्रकाशदाजी (वडताल), स्वा. प्रेमस्वरुपदासजी, स्वा. रघुवीरचरणदासजी, स्वा. कृष्णप्रसाददासजी, जानकीदासजी बापूश्री इस अवसर पर पधारे थे।

गुजरात विधानसभा के माननीय अध्यक्षश्री रमणलाल वोरा शिक्षण तथा महेसूल मंत्रीश्री भूपेन्द्रसिंह चूडासमा इत्यादि महानुभाव पधारे थे।

मोरली मनोहरदेव श्रीहरिकृष्ण महाराज के १९० वे

पाटोत्सव प्रसंग पर प.पू. भावि आचार्य महाराजश्री पधारकर कार्यक्रम को संपन्न किये थे । इसके साथ ही उन्होंने अन्नकूट की आरती भी उतारी थी । पाटोत्सव के यजमान श्री तथा पारायण के यजमानश्रीने इस दिव्य उत्सव की सेवा का अमूल्य लाभ लिया था। (को. सत्यसंकल्पदासजी)

श्री स्वामिनारायण मंदिर पेथापुर १३ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से मंदिर में विराजमान बालस्वरुप घनश्याम महाराज तथा श्री राधाकृष्णदेव का १३ वाँ पाटोत्सव ता. ७-५-१७ से ता. १२-५-१७ तक धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर ''स्नेहगीता'', रात्री कथा, १३ घन्टे की अखंड धून, ठाकुरजी का पुष्पाभिषेक, रासोत्सव, षोडशोपचार महाभिषेक, प.पू. लालजी महाराजश्री के वरद् हाथों से किया गया था। सभा में सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिये थे । बहनो को दर्शन देने के लिये प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारी थी। इस प्रसंग पर कालुपुर, बापूनगर, रणजीतगढ, बावला, बोपल, वणजर से संत पधारे थे । इसके यजमानश्री गज्जर सत्संग समाज, पेथापुर, पशाभाई पटेल (उनावा) रश्मिकांतभाई, पी.पी. जोशी, बलवंतकुमार चौधरी रसिकभाई गज्जर थे। सभा संचालन स्वामी भक्तिपोषकदासजी (बावला) ने किया था।

(स्वा. घनश्यामस्वामी - पेथापुर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गुलाबपुरा ९२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा प.पू. हरिस्वरुपदासजी के आशीर्वाद से यहाँ के मंदिर का ९२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. पटेल मणीलाल नरसिंहदास मोतीदास परिवार के यजमान पद पर चैत्र कृष्ण-२ ता. १२-४-१७ को मनाया गया था।

पाटोत्सव का आयोजन स्वा. हरिस्वरुदासजी के शिष्य मंडल ट्रस्टीश्री, मंदि के सदस्य तथा गाँव के हरिभक्तों के सहयोग से सुंदर आयोजन हुआ था । ठाकुरजी की अन्नकूट आरती महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी तथा यजमान परिवारने उतारी थी। बाद में प्रसाद ग्रहण करके सभी लोग शोभायात्रा में सम्मिलित हुए थे।

(अल्पेशभाई पटेल - गुलाबपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती (रामनगर) १९ वाँ वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर साबरमती के १९ वें वार्षिक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में ता. ५-५-१७ को महापूजा-ठाकुरजी की अन्नकूट आरती, सत्संग सभा का आयोजन किया गया था। पाटोत्सव के यजमान किरीटभाई डाह्याभाई झुंडालवाला थे । इस प्रसंग पर गांधीनगर मंदिर से शा.पी.पी. स्वामी, बालस्वरुप स्वामी इत्यादि संत मंडल ठाकुरजी की अन्नकूट आरती उतारकर सर्वोपरि उपासना का रहस्य समझाया था। (नटुभाई पटेल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वडनगर श्री घनश्याम महाराज का चंदन चर्चित दर्शन

गुजरात की धार्मिक तथा ऐतिहासिक नगरी वडनगर में प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी की प्रेरणा से मंदिर में विराजमान बाल स्वरुप घनश्याम महाराज का वैशाख शुक्ल-३ को चंदन चर्चित दर्शन का लाभ को.सा. विश्वप्रकाशदासजी के प्रयास से सभी को मिला। हरिभक्त दर्शन करके खूब आनंदित हुए थे। (शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी - वडनगर)

श्री स्वामिनारायण मंदिर राबडीया ६ ठा वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा जेतलपुरधाम के प.पू. शा.स्वा. आत्मप्रकाशदासजी तथा पू. पी.पी. स्वामी की प्रेरणा से राबडीया श्री स्वामिनारायण मंदिर का छठां वार्षिकोत्सव धूमधाम से मनाया गया था।

इस प्रसंग पर जेतलपुरधाम से पू. आत्मप्रकाशदासजी इत्यादि संत मंडल पधारकर ठाकुरजी का अभिषेक तथा अन्नकूट आरती उतारकर भक्तों को दर्शन का लाभ मिला था । बाद में ठाकुरजी के प्रसाद की व्यवस्था भी की गई थी । अगल बगल के गाँवो से भी भक्त दर्शनका लाभ लिये थे।

(कोठारी हरिकृष्णभाई राबडीया)

श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण

प.पू.अ.सौ. लक्ष्मीस्वरुपा गादीवालाजी की आज्ञा से तथा सां.यो. झबेरबा की प्रेरणा से ता. २९-४-१७ से ता. ४-५-१७ तक श्री स्वामिनारायण मंदिर वावोल में श्रीमद् भागवत सप्ताह का पटेल कांताबहन विनुभाई के यजमान पद पर आयोजन किया गया था।

ता. ५-५-१७ को प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर कथा श्रवण करके ठाकुरजी के अन्नकूटकी आरती उतारकर सभा में बहनों को हार्दिक आशीर्वाद दी थी। कथा श्रवण में धमासणा, चांदखेडा, कलोल, अंबापुर, मोखासण इत्यादि

गाँवो से सांख्ययोगी बहनें पधारी थी । (सां.यो. दर्शनाबा, शारदाबहन, उषाबहन - वावोल)

श्री स्वामिनारायण मंदिर रनेला (झाडीदेश) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा भंडारी स्वामी सूर्यप्रकाशदासजी की प्रेरणा से झाडी विस्तार (पंच महाल) के रनेला गाँव में शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने हरिभक्तों के सहयोग से मंदिर का कार्यपूर्ण होते ही प्राण प्रतिष्ठा के उपलक्ष्य में ता. २३-५-१७ से २३-५-१७ तक यज्ञविधितथा "श्री हरिऐश्वर्य लीला" का कथा वार्ता शा.स्वा. विश्वस्वरुपदासजीने करवाया था ।

अंतिम दिन प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों सर्वोपरि घनश्याम महाराज, श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव इत्यादि देवों की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे संपन्न की गई थी ।

प्रासंगिक सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री अपने हार्दिक आशीर्वाद में सभी को मंदिर में नित्य दर्शन करने का आशीर्वाद दिया था । (कोठारीश्री रनेला)

श्री स्वामिनारायण मंदिर बोपल १२ वाँ पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से सर्वोपरी घनश्याम महाराज आदि देवों का १२ वाँ वार्षिक पाटोत्सव प.भ. कनुभाई पटेल (मेडा) परिवार के यजमान पद पर वैशाख शुक्ल-३ ता. २-५-१७ को धूमधाम से मनाया गया था । संतो द्वारा ठाकुरजी का षोडशोचार अभिषेक-धुन-भजन-कीर्तन-कथा के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों अन्नकूट की आरती उतारी गई थी ।

प्रासंगिक सभा में कालुपुर मंदिर के महंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी, पू.ब्र. राजेश्वरानंदजी, इत्यादि संतो की प्रेरक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने प्रसन्नचित्त होकर सभी को आशीर्वाद दिया था । घनश्याम महाराज की अलौकिक मूर्ति को यजमान वीणा बहन प्रवीणबाई भावसार के यहाँ से बाजे-गाजे के साथ शोभायात्रा द्वारा ता. ३०-४-१७ को मंदिर में लाया गया था । सभी संत-भक्त दर्शन करके प्रसाद ग्रहण करके धन्य हो गये । (प्रविणभाई उपाध्याय)

नारणपुरा (नवदीप होल) में श्रीमद् भागवत पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथामहंत शा.स्वा. हरिकृष्णदासजी (कालुपुर) तथा पी.पी. स्वामी (नारायणघाट) की प्रेरणा से ता. ९-५-१७ से ता. १५-५-१७ तक रात्रि ८-०० बजे से ११-०० बजे तक स्वा. रामकृष्णदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् भागवत सप्ताह पारायण कथा संपन्न हुई थी । कथा के अवसर पर सभा संचालन शा. नारणमुनिदासजी (कालुपुर) ने किया । कथा में प्रथम पोथीयात्रा, श्रीकृष्ण जन्मोत्सव, रास, समूह आरती इत्यादि किया गया था । (महंतश्री गांधीनगर मंदिर से-२)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ईश्वरपुरा २२ वाँ पाटोत्सव एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर (बहनो का) मूर्ति प्राण प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से ईश्वरपुरा मंदिर का २२ वाँ पाटोत्सव तथा बहनों के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा धूमधाम से की गई थी ।

ता. १३-५-१७ से ता. १७-५-१७ तक पाटोत्सव के उपलक्ष्य में स्वा. रामकृष्णदासजी तथा स्वा. चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर श्रीमद् सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण सम्पन्न हुई । जिस में पोथीयात्रा, श्री घनश्याम जन्मोत्सव, श्रीहरि गादी अभिषेक, श्री नरनारायणदेव प्रतिष्ठा महोत्सव, सांस्कृतिक कार्यक्रम, धर्मकुल दर्शन संतो की प्रेरकवाणी, ठाकुरजी का अभिषेक, अन्नकूट दर्शन इत्यादि धूमधाम से मनाया गया था ।

इस प्रसंग पर अनेकों धाम से संत पधारे थे । संहिता पाठ में भूदेव बिराजे थे ।

पारायण के समय प.पू. लालजी महाराजश्री तथा प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी पधारकर सभी को हार्दिक आशीर्वाद का लाभ दी थी । ता. १७-५-१७ को प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से बहनों के मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा की गई थी । बाद में सभा में प.पू. महाराजश्री ने गाँव के हरिभक्तों को हार्दिक आशीर्वाद दिया था ।

उत्सव में सेवा करनेवाले कोठारी स्वामी जे.के., शा. कुंजविहारीदास, जयवल्लभ स्वामी, गोपालजीवन स्वामी, नारायणमुनि स्वामी तथा श्रीनरनारायणदेव युवक मंडल तथा गाँव के हरिभक्तों की सेवा प्रेरणारुप थी ।

(कोठारीश्री ईश्वरपुरा)

श्री स्वामिनारायण मंदिर गांधीनगर (से-२) श्री धीरजाख्यान पंचाह्न रात्री पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से यहाँ के मंदिर में ता. १७-५-१७ से ता. २१-५-१७ तक निष्कुलानंद काव्यान्तर्गत श्री धीरजाख्यान पंचदिनात्मक कथा स.गु. स्वा.

चैतन्यस्वरुदासजीने की थी, जिस की यजमान गीताबहन मुकेशभाई पटेल थी । समग्र आयोजन गांधीनगर मंदिर, श्री नरनारायणदेव युवक मंडल, समस्त सत्संग समाज गांधीनगर की तरफ से किया गया था । इस प्रसंग पर अनेकों धामों से संत पधारे थे । गांधीनगर तथा अगल बगल के गाँवो से हरिभक्त कथा श्रवण का लाभ लिये थे ।

(को. श्री गांधीनगर से-२)

श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया (आर.सी. टेकनिकल रोड) श्रीहरि मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वामी पी.पी. स्वामी (गांधीनगर) की प्रेरणा से श्री स्वामिनारायण मंदिर घाटलोडिया समस्त सत्संग समाज के आयोजन से यहाँ के मंदिर में श्रीहरि मूर्ति प्रतिष्ठा महोत्सव ता. २७-५-१७ से ता. ३१-५-१७ तक धूमधाम से सम्पन्न हुआ ।

इस प्रसंग के उपलक्ष्य में श्री धीरजाख्यान पंचाहन पारायण स्वामी चैतन्यस्वरुपदासजी के वक्तापद पर सम्पन्न हुआ । संहिता पाठ में स्वामी हरिप्रियदासजी थे । कथा पारायण के प्रारंभ में ता. २७-५-१७ को सायंकाल ४-०० बजे पारायण के यजमानश्री पटेल कांतिभाई सोमदास दलाल के निवास स्थान से पोथीयात्रा निकाली गई थी । ता. २९-५-१७ को प्रातः काल ८-०० बजे यज्ञारम्भ तथा ता. ३१-५-१७ को यज्ञकी पूर्णाहुति की गई थी । ठाकुरजी की नगरयात्रा ता. ३०-५-१७ को सायंकाल ४-०० बजे निकाली गई थी । इस प्रसंग पर प.पू.अ.सौ. गादीवालाजी तथा प.पू.अ.सौ. बड़ी गादीवालाजी पधारी थी । कथा श्रवण करके सभी को हार्दिक आशीर्वाद दी थी । ता. ३१-५-१७ को प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से श्री घनश्याम महाराजकी तथा श्री नरनारायणदेव, श्री राधाकृष्णदेव की प्राण प्रतिष्ठा कीगई थी । बाद में यज्ञ की तथा कथा की पूर्णाहूति की आरती उतारकर सभा में विराजमान हुये थे । कथा में अनेकों धामों से संत पधारे थे जिस में कालुपुर मंदिर के महंत स्वामी, बाल स्वरुप स्वामी (मूली) की प्रेरणात्मक वाणी के बाद प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्रीने हार्दिक आशीर्वाद दिया था । अपने आशीर्वाद में उन्होंने कहा की प्रभु यहाँ के सभी को सुखिया करें । इस प्रसंग पर मेडीकल केम्प तथा ब्लड डोनेशन भी रखा गया था । छोटे-बड़े सभी भक्तों की सेवा सराहनीय थी । प.पू. महाराजश्री की आज्ञा से संत तथा हरिभक्त प्रेरणादायी सेवा कार्य किये थे । इससे सभी के कल्याण का मार्ग खुल गया। (रमेशभाई पटेल - डांगरवावाला)

मूली प्रदेश के सत्संग समाचार

मूली मंदिर में श्री राधाकृ्णदेव हरिकृष्ण महाराज को चन्दन चर्चित दर्शन

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा स्वा. यज्ञप्रकाशदासजी, स्वा. अजयप्रकाशदासजी इत्यादि संत मंडल द्वारा प्रतिवर्ष की तरह इस वर्ष भी मूली मंदिर में विरजामान श्रीराधाकृष्णदेव हरिकृष्ण महाराज का वैशाख शुक्ल-३ से ज्येष्ठ शुक्ल-१५ पर्यन्त चन्दन चर्चित सभी को दर्शन का लाभ मिला था । ऐसी असह्य गर्मी में ठाकुरजी को ऐसे शीतलता प्रदान करने वाले अलंकार से सभी के हृदय में भी शीतलता प्राप्त रो रही थी, ऐसे में सभी भक्तजन सेवा का लाभ लेकर धन्य हो गए। (पार्षद भरत भगत - मूली)

खेराली गाँव में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा महंत स्वा. प्रेमजीवनदासजी की प्रेरणा से खेराली गाँव में ता. २५-४-१७ से ता. २९-४-१७ तक स्वामी त्यागवल्लभदासजी के वक्ता पद पर श्रीमद् सत्संगिजीवन पंचाहन पारायण का सुंदर आयोजन किया गया था । इस कथा में अगल बगल के गाँव से भी भक्त कथा श्रवण का लाभ लेने आते थे ।

इस प्रसंग पर मूली मंदिर से महंत स्वामी पधारे थे । सभा संचालन स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने किया । समग्र आयोजन को.स्वा. कृष्णवल्लभदासजीने मार्गदर्शन में किया गया था। (शैलेन्द्रसिंह झाला)

मेमका में कथा पारायण

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा सुरेन्द्रनगर मंदिर के महंत स्वामी की प्रेरणा से ता. ३-५-१७ से ७-५-१७ तक मेमका गाँव में स्वा. त्यावल्लभदासजी के वक्तापद पर रात्रीय कथा पारायण सम्पन्न हुई । कथा के बाद महाप्रसाद की भी व्यवस्था की गई थी । मूली मंदिर से संत भी पधारे थे । संचालन स्वा. प्रेमवल्लभदासजीने किया । कोठारी स्वामी कृष्णवल्लभदासजी के मार्गदर्शन से मेमका के श्री नरनारायणदेव युवक मंडल ने किया ।(शैलेन्द्रसिंह झाला)

विदेश सत्संग समाचार

पारसीपनी (यु.एस.ए.) श्री स्वामिनारायण मंदिर (छपैयाधाम) का द्वितीय वार्षिक पाटोत्सव

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा समग्र धर्मकुल की कृपा से तथा पारसीपनी मंदिर के महंत स्वामी अभिषेकप्रसाददासजी एवं पुजारी स्वामी धर्मविहारीदासजी के सहयोग से ता. २३-४-१७ को पारसीपनी मंदिर का द्वितीय पाटोत्सव प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से संपन्न किया गया । इस प्रसंग पर समूह महापूजा का भी आयोजन किया गया था ।

इस पाटोत्सव के अन्तर्गत ता. १९-४-१७ से २३-४-१७ तक सत्संगिभूषण पंचान्ह पारायण वडनगर मंदिर के महंत स्वामी नारायणवल्लभदासजी वक्तापद पर सम्पन्न हुआ। पाटोत्सव के मुख्य यजमानश्री पटेल प्रहलादभाई विठ्ठलदास (करजीसण) परिवार तथा श्री दीपकभाई शंकरलाल पटेल (नारदीपुर) दक्षेशभाई कनुभाई पटेलने लाभ लिया था। कथा पारायण के मुख्य यजमानश्री जनकभाई बाबुलाल पटेल (उवारसदवाले) कथा की सहयमान श्रीमती पुष्पाबहन प्रेमचंद्रभाई पाटडियाने लाभ लिया था। प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के पूजन के यजमान श्री हेमचंदभाई तथा अभिषेक के यजमान श्री सुधीरभाई, अन्नकूट के यजमान श्री रमेशभाई, भोजन के यजमान श्री नटवरलाल पटेल, श्री ठाकोरभाई, श्री रवि हसमुखलाल पटेल इत्यादि हरिभक्तों ने लाभ लिया था। ध्वजा के यजमान श्री प्रफुल्लकुमार पटेल, श्री स्वपनिल तथा निसर्ग, श्री माणेकलाल इत्यादि भक्तोंने नाना विधभोजन सामग्री की सेवा कार्यभार लिया था।

इस शुभ प्रसंग पर प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के शुभ वरद् हाथों से देवों का अभिषेक, शिवलिंग की प्राण प्रतिष्ठा वेदोक्त विधिसे की गई थी। सभा में स.गु. पी.पी. स्वामी तथा पू. बड़े पी.पी. स्वामी, स्वा. वासुदेवचरणदासजीने प्रासंगिक प्रवचन किया था। पूर्णाहुति के बाद प.पू. आचार्य महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

अयोध्याधाम जेक्शन मीसीसीपी नूतन मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से अमेरिका में ईसो संस्था द्वारा मीसीसीपी के जेक्शन में नूतन स्वामिनारायण मंदिर में ता. १४, १५, १६ अप्रैल के समय प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से मूर्ति प्रतिष्ठा की गई थी। इस प्रसंग पर श्रीमद् भागवत दशम स्कन्धत्रिदिनात्मक पारायण शा. दिव्यप्रकाशदासजीके वक्तापद पर सम्पन्न हुई। इस प्रसंग पर देश विदेश से संत पधारे थे। जिस में जेतलपुर से पू. पी.पी. स्वामी, नीलकंठ स्वामी, यज्ञप्रकाश स्वामी, हरिनंदन स्वामी, नित्यप्रकाश स्वामी, भक्ति स्वामी, महेन्द्र भगत तथा इसो चेप्टर के अनेक हरिभक्त उपस्थित थे। रविवार को प्रातः प.पू. आचार्य महाराजश्री के वरद् हाथों से ठाकुरजी की प्राण प्रतिष्ठा धूमधाम से की गई थी। बाद में यज्ञ में नारियल की पूर्णाहुति करके सभा में संतो की प्रेरकवाणी के बाद हरिभक्तों का सन्मान किया गया था।

प.पू. महाराजश्री का पूजन-अर्चन यजमान परिवारने किया। संतो का भी पूजन हरिभक्तों द्वारा किया गया था। बाद में प.पू. महाराजश्रीने सभी को हार्दिक आशीर्वाद दिया था।

बाद में प.पू. आचार्य महाराजश्रीने अन्नकूट की आरती उतारी थी। सभी हरिभक्त दर्शन करके धन्य हो गये।

(प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर ह्युस्टन हनुमान जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा ह्युस्टन मंदिर के महंत शा. दिव्यप्रकाशदासजी, नीलकंठदासजी तथा भक्तिनंदनदासजी की प्रेरणा से ह्युस्टन सुगर लेन्ड श्री स्वामिनारायण मंदिर में ११ अप्रैल के सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक श्री हनुमान जयन्ती का उत्सव मनाया गया था। सभा मंडप में सर्व प्रथम धुन-कीर्तन तथा यजमानों द्वारा मारुतियज्ञ में पूर्णाहुति के बाद आरती उतारे थे। संतोने श्री हनुमानजी का माहात्म्य समझाया था। अन्त में सभी लोग भोजन का महाप्रसाद लेकर प्रस्थान किये थे। (प्रवीण शाह)

श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनीया श्री हनुमान जयंती

प.पू.ध.धु. आचार्य महाराजश्री की आज्ञा से तथा मंदिरके महंत स्वामी धर्मकिशोर स्वामी तथा पार्षद मूलजी भगत (अयोध्या) की प्रेरणा से १५ अप्रैल सायंकाल ५ बजे से ८ बजे तक अपने श्री स्वामिनारायण मंदिर कोलोनिया में श्री हनुमान जयंती धूमधाम से मनाई गई थी।

आज के दिन प.पू. बड़े महाराजश्री के प्रागट्योत्सव का दिन होने से हरिभक्तों ने बड़े महाराजश्री के तस्वीर का पूजन-अर्चन करके भगवान श्रीहरि की धुन की थी। श्री हनुमानजी का पूजन-अर्चन आरती यजमान परिवार तथा भूदेवों के साथ संपन्न हुआ था। महंत स्वामीने प.पू. बड़े महाराजश्री द्वारा की गई सभी प्रवृत्तियों की रुपरेखा को समझाया था। धर्मकुल की प्रवृत्तियों को याद करके उनके माहात्म्य को समझाया गया था। हनुमानजी का माहात्म्य समझाकर ठाकुजी का महाप्रसाद लेकर सभी अपने स्वस्थान के लिये प्रस्थान किये थे। (प्रवीणभाई शाह)

संपादक, मुद्रक एवं प्रकाशक : महंत शास्त्री स्वामी हरिकृष्णदासजी द्वारा, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद के लिए श्रीस्वामिनारायण प्रिन्टींग प्रेस, श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ से मुद्रित एवं श्री स्वामिनारायण मंदिर, कालुपुर, अहमदाबाद (गुजरात) पीन कोड-३८० ००१ द्वारा प्रकाशित।

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर रनेला (पंच महाल) में मूर्ति प्रतिष्ठा करते हुए तथा सभा में दर्शन देते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री ।(२) श्री स्वामिनारायण मंदिर उनावा के ३५ वें पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी के समक्ष अन्नकूट दर्शन तथा सभा में प.पू. आचार्य महाराजश्री का पूजन-आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।(३) इडर मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर ठाकुरजी का अन्नकूट दर्शन तथा सभा में प.पू. महाराजश्री की आरती उतारते हुए यजमान परिवार ।(४) धोलका मंदिर के पाटोत्सव प्रसंग पर सभा में दर्शन देते हुए प.पू. लालजी महाराजश्री ।(५) घाटलोडिया (आर.सी. टेकनीकल) मंदिर में मूर्ति प्रतिष्ठा प्रसंग पर व्यासपीठ का पूजन करते हुए अमदावाद मंदिर के महंत स्वामी हरिकृष्णदासजी , शा.स्वा. नारायणवल्लभदासजी (वडनगर) तथा यजमान परिवार ।

Registered under RNI - No - GUJHIN/2007/20220 " Permitted to post at Ahd PSO on 11 the every month under postal Regd. No. GUJ. 581/15-17 issued SSP Ahd Valid up to 31-12-2017

(१) श्री स्वामिनारायण मंदिर कालुपुर मंदिर में श्री घनश्याम महोत्सव प्रसंग पर श्री बालस्वरूप घनश्याम महाराज का महाभिषेक करते हुए प.पू. आचार्य महाराजश्री तथा प.पू. लालजी महाराजश्री तथा अन्नकूट की आरती उतारते हुए प.पू. बड़े महाराजश्री ।

Praful Kharsani